विश्व हिंदी समाचार

Vishwa Hindi Samachaar

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष: 15 | अंक: 57 | मार्च, 2022

विश्व हिंदी दिवस 2022

विश्व हिंदी दिवस 2022 के उपलक्ष्य में विश्व भर में हिंदी के अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस वर्ष विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस सहित भारत, टोक्यो, नेपाल, यूक्रेन, जॉर्डन, कीनिया, हंगरी, सिंगापुर, जर्मनी, सेशेल्स, सूरीनाम, कनाडा आदि देशों में हिंदी का ध्वज लहराया गया। उक्त देशों में विश्व हिंदी दिवस की गतिविधियों की रिपोर्ट इस अंक में पढ़ें।

पृ. 2-7

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन



10 जनवरी, 2022 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिंदी सचिवालय के सभागार, फ़ेनिक्स में विश्व हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया।

पृ. 2-4

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का 14वाँ आधिकारिक कार्यारंभ दिवस



11 फ़रवरी, 2022 को कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय तथा महात्मा गांधी संस्थान के सहयोग से तथा शिक्षा, तृतीयक शिक्षा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय और भारतीय उच्चायोग के तत्वावधान में विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय, फ़ेनिक्स में सचिवालय के कार्यारंभ दिवस की 14वीं वर्षगांठ मनायी गयी।

पृ. 2-10

'हिंदी और उसकी बोलियों का अंतर्संबंध' विषयक वेब संगोष्ठी



30 जनवरी, 2022 को विश्व हिंदी सचिवालय, केंद्रीय हिंदी संस्थान तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा भाषा-विमर्श की कड़ी में 'हिंदी और उसकी बोलियों का अंतर्संबंध' विषय पर वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

पृ. 11

'वर्तमान में हिंदी पत्रिकाओं की प्रासंगिकता' विषय पर परिसंवाद एवं काव्य उत्सव



18 फ़रवरी, 2022 को कानोरिया पीजी महिला महाविद्यालय, जयपुर द्वारा 'वर्तमान में हिंदी पत्रिकाओं की प्रासंगिकता' विषय पर परिसंवाद एवं काव्य-उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. आशीष कंधवे रहे तथा सुश्री कोमल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थीं।

पृ. 10-11

'उड़ने वाला घोड़ा' पुस्तक का लोकार्पण



2 जनवरी, 2022 को गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश स्थित होटल राजपथ रेज़ीडेंसी के भव्य सभागार में 'उद्भवसामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संस्था के तत्वावधान में लेखक श्री कृष्ण कुमार वर्मा की कृति 'उड़ने वाला घोड़ा' पुस्तक का लोकार्पण किया गया।

पृ. 13

श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफ़्को साहित्य सम्मान समारोह

31 जनवरी, 2022 को संत गाडके जी महाराज सभागार गोमती नगर में उर्वरक क्षेत्र की प्रमुख संस्था इफ़्को द्वारा वर्ष 2021 के अंतर्गत श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफ़्को साहित्य सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत वरिष्ठ कथाकार शिवमूर्ति को सम्मानित किया गया।



पृ.15

हिंदी की सर्वश्रेष्ठ गायिका लता मंगेशकर का निधन



6 फ़रवरी, 2022 को हिंदी की सर्वश्रेष्ठ गायिका लता मंगेशकर का 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप प्रसिद्ध पार्श्वगायिका थीं, जिनकी आवाज़ ने 6 दशकों से भी अधिक संगीत की दुनिया को सुरों से नवाज़ा है। विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि है।

पृ. 15

इस अंक में आगे पढ़ें :

- *परिसंवाद/संगोष्ठी/गोष्ठी/सम्मेलन/कार्यशाला* — *पृ. 10-13*
- *लोकार्पण* — *पृ. 13-15*
- *सम्मान एवं पुरस्कार* — *पृ. 15*
- *श्रद्धांजलि* — *पृ. 15*
- *संपादकीय* — *पृ. 16*

ISSN 1694-2485

Newsletter WHS March 2023 Final.indd 1 06/04/2023 11:48:16

विश्व हिंदी दिवस 2022

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस द्वारा विश्व हिंदी दिवस 2022 का आयोजन



10 जनवरी, 2022 को शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिंदी सचिवालय के सभागार, फ़ेनिक्स में विश्व हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया। मॉरीशस की उपप्रधान मंत्री, शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री, माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन, भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्रीमती के. नंदिनी सिंग्ला तथा विदेश, क्षेत्रीय एकीकरण एवं अंतरराष्ट्रीय व्यापार मंत्री, माननीय श्री आलान गानू ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

मुख्य अतिथि के रूप में माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन ने विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए विश्व हिंदी सचिवालय की गतिविधियों की सराहना की। उन्होंने कहा *"हिंदी की प्रकृति और विशेषता एकदम निराली है। यह भाषा फ़िल्मों द्वारा मनोरंजन तो करती ही है, दूसरी ओर धर्म, संस्कृति,*



दर्शन, परम्परा आदि की वाहिका भी है। जब से हमारे पूर्वजों के कदम मॉरीशस में पड़े, तब से हिंदी का भी आगमन हुआ। उस समय से आज तक हिंदी आगे बढ़ती गई। बैठका से निकलकर विश्वविद्यालय तक उसकी यात्रा विचित्र है। अनेक देशों के शिक्षा क्रम में हिंदी के आने से आज उसका सफल भविष्य निश्चित है। हिंदी को गति देने के लिए हमें अपना योगदान देना होगा। युवक हिंदी सिखाने के नए तरीकों से आकर्षित होंगे और हिंदी का विकास होगा।" उपप्रधान मंत्री ने प्रौद्योगिकी को शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण अंग बताया और कहा कि तकनीकी उपकरणों की सहायता से हिंदी को और गति मिलेगी।

इस अवसर पर भारत की विदेश राज्य मंत्री, माननीया श्रीमती मीनाक्षी लेखी ने वीडियो रिकॉर्डिंग द्वारा सभी को विश्व हिंदी दिवस की शुभाकामनाएँ देते हुए हिंदी के प्रति समर्पित उन साहित्यकारों के प्रति आभार प्रकट किया, जिनके सहयोग से हिंदी को



विश्व स्तर पर स्थापित किया जा सका है। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता को देखकर विदेशी हिंदी के प्रति आकर्षित होते हैं।



समारोह के दौरान 'विश्व में हिंदी की संकल्पना' पर एक वीडियो रिकॉर्डिंग चलाई गई, जिसमें श्रीलंका, चीन, न्यू ज़ीलैंड, जापान, ऑस्ट्रेलिया, फ़िजी, कनाडा, अमेरिका, दक्षिण अफ़्रीका, तनज़ानिया, यूनाइटड किंग्डम, पुर्तगाल, जर्मनी, नीदरलैंड, उज़्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान, कतर, दुबई, सूरीनाम आदि से हिंदी प्रेमियों ने हिंदी के प्रति अपनी रुचि व प्रेम का प्रदर्शन किया।

महामहिम श्रीमती के. नंदिनी सिंग्ला ने इस अवसर



पर भारत गणराज्य के प्रधानमंत्री, महामहिम श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़कर सुनाया। उन्होंने कहा *"भारत से बाहर मॉरीशस ही एकमात्र ऐसा देश है, जिसने विश्वव्यापी स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार की ज़िम्मेदारी ली है। विश्व हिंदी सचिवालय भारत और मॉरीशस की अनोखी साझेदारी का प्रतीक है। यदि लोग हँसते-गाते हिंदी सीखने लगें, तो हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनने में कोई देरी नहीं होगी।"* उन्होंने विश्व हिंदी सचिवालय को हिंदी के प्रचार-प्रसार करने हेतु कई सुझाव भी दिए।



समारोह के आरम्भ में विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने उपस्थित महानुभावों व सभी अतिथियों का स्वागत किया और विश्व हिंदी दिवस के इतिहास पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात्, उन्होंने आयोजित अंतरराष्ट्रीय संस्मरण-लेखन प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा की।

डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ तथा डॉ. बीरसेन जागासिंह की पुस्तकों का लोकार्पण



समारोह के दौरान डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ की पुस्तक 'विकसित हिंदी कहानियाँ' (25 लेखकों की कहानियों का संकलन) तथा डॉ. बीरसेन जागासिंह द्वारा रचित 150 कविताओं के सुन्दर संग्रह 'हार्दिक प्रतिध्वनियाँ' का लोकार्पण संपन्न हुआ।

विश्व हिंदी पत्रिका के 13वें अंक का विमोचन



प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सचिवालय ने 'विश्व हिंदी पत्रिका' के 13वें अंक (मुद्रित व वेब प्रारूपों) का विमोचन किया। इस अंक में देश-विदेश के हिंदी विद्वानों द्वारा लिखित 37 आलेख प्रकाशित किए गए हैं, जो हिंदी के उद्भव एवं विकास, लिपि, साहित्य और संस्कृति, हिंदी का ई-संसार और जन-माध्यम, हिंदी-शिक्षण, हिंदी के विविध आयाम, हिंदी के क्षेत्र में आज के प्रश्न, हिंदी के पथप्रदर्शक तथा दिवंगत हिंदी साहित्यकारों से संबंधित हैं। यह प्रकाशन सचिवालय की वेबसाइट www.vishwahindi.com पर उपलब्ध है।

अंतरराष्ट्रीय संस्मरण लेखन प्रतियोगिता

विश्व हिंदी दिवस 2022 के उपलक्ष्य में सचिवालय ने वर्ष 2021 में 'अंतरराष्ट्रीय संस्मरण लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन किया था। नियमानुसार प्रतियोगिता को 5 भौगोलिक क्षेत्रों में बाँटा गया था।



– 1. अफ्रीका व मध्य पूर्व 2. अमेरिका, 3. एशिया व ऑस्ट्रेलिया (भारत के अतिरिक्त), 4. यूरोप, 5. भारत। समारोह में मॉरीशस के तीन विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। प्रथम पुरस्कार श्रीमती सविता तिवारी एवं श्रीमती सुनीता आर्यनायक को प्रदान किया गया। श्री आकाश आर्यनायक को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। विजेताओं को प्रमाण-पत्र एवं नकद पुरस्कार दिए गए। प्रतियोगिता के परिणाम सचिवालय की वेबसाइट www.vishwahindi.com पर उपलब्ध हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रम



समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत महात्मा गांधी संस्थान के कलाकारों द्वारा कथक तथा प्लेट नृत्य प्रस्तुत किया गया। नृत्य आधुनिक हिंदी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला कृत 'ध्वनि' कविता पर आधारित रहा। डॉ. शैलाना देवी रामडू, श्रीमती मनीषा द्वारका और श्रीमती मीता बिहारी ने नृत्य प्रस्तुत किया।



इसके अतिरिक्त लेखक, संगीतकार तथा शिक्षक, श्री मोहरलाल चमन द्वारा 'वंदना के इन स्वरों से' गीत की प्रस्तुति की गई। श्री संदीप गूलोब ने सितार पर तथा श्री यशपाल दीक्षित जोगेश्वर ने तबले पर गायन गुरु श्री मोहरलाल चमन का साथ दिया।



इस अवसर पर 'हिंदी के लिए उठाएँगे नया कदम' शीर्षक पर नाटक की प्रस्तुति हुई, जिसमें श्रीमती शर्मिला गणपत, श्रीमती आरती हेमराज-परमेसर, श्री प्रकाश हरनोम, श्री प्रीतम बंगशी, श्री माधव गणेश, सुश्री दीपशिखा ओचम्बित तथा सुश्री केशना रामरीचिया ने भाग लिया।

विभिन्न मंत्रालयों के अधिकारी गण, शैक्षिक, धार्मिक व सांस्कृतिक संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं सदस्य गण और मॉरीशसीय हिंदी साहित्यकारों, शिक्षकों आदि ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। मंच-संचालन डॉ. माधुरी रामधारी ने किया।

अन्य गतिविधियाँ – लेखक सम्मेलन

समारोह के द्वितीय सत्र में लेखक सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय की कार्यवाहक उपनिदेशक (संस्कृति) श्रीमती अनुपमा चमन चोमू ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि *"हमारे कवि और लेखक हमारे समाज का दर्पण प्रस्तुत करते हैं। मॉरीशस और भारत को उनके कवियों व लेखकों द्वारा जाना जाता है।"*



सम्मेलन के दौरान श्री निरंजन बिगन ने डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ द्वारा संपादित 'विकसित हिंदी कहानियाँ' पुस्तक का सामूहिक रूप से समीक्षा करते हुए कहा कि *"इस कहानी-संग्रह का मूल विषय पारिवारिक संबंध है। इस संग्रह ने न केवल कल्पना लोक का विचरण कराया है, अपितु जीवन की वास्तविकता की बखूबी चर्चा की है।"*

श्री कविराज बाबू ने 'अध: पतन' कहानी पर विचार व्यक्त करते हुए कहा *"यह कहानी धर्म-परिवर्तन जैसे ज्वलंत विषय पर आधारित है, कहानी का प्रतिपाद्य विषय गाँव वालों के संवाद द्वारा उजागर होता है।"* डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ ने बताया कि *"अध: पतन कहानी में धर्म-परिवर्तन की समस्या को रेखांकित किया गया है तथा उस समस्या का परिणाम भी बताया गया है।"*

महात्मा गांधी संस्थान के वरिष्ठ व्याख्याता, डॉ. कृष्ण कुमार झा ने 'धरती माँ की मुस्कान' पर विचार प्रकट करते हुए कहा *"कहानी में दहेज और वैवाहिक संबंधों को लेकर कई प्रकार की स्थितियों, परिस्थितियों तथा परिणामों का उल्लेख हुआ है।"*

डॉ. लालदेव अंचराज ने कहानी के कथानक का विश्लेषण किया।

श्री राजेंद्र सदासिंह ने 'शिकायत' कहानी की समीक्षा की और कहानीकार डॉ. हेमराज सुंदर ने 'शिकायत' के केन्द्रबिन्दु पर टिप्पणी करते हुए कहा कि *"इस कहानी में पात्र छोटी बच्ची है, जो अपनी माँ द्वारा परित्याग किए जाने पर प्रश्न करती है। वह बाल्यावस्था में ही अपने प्रश्नों के साथ अपनी माँ का सामना करना चाहती है। उस छोटी बच्ची की शिकायत कहानी को आगे ले जाती है।"*

साहित्य संवाद की समन्वयक एवं हिंदी लेखिका, श्रीमती अंजू घरभरन ने 'परोपकार' कहानी पर अपने अभिमत प्रस्तुत करते हुए कहा *"परिवारों में बहुत समस्याएँ थीं तथा उन समस्याओं से जूझते हुए पात्रों पर यह कहानी लिखी गई है।"* हिंदी लेखक श्री मोहनलाल जगेसर के अनुसार *"परोपकार कहानी से हमें परिश्रम और परोपकार करने की प्रेरणा मिलती है।"*

विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद् के सदस्य, डॉ. उदय नारायण गंगू ने डॉ. बीरसेन जागासिंह कृत 'हार्दिक प्रतिध्वनियाँ' पुस्तक की समालोचना करते हुए कहा *"इस पुस्तक के माध्यम से कवि का बहुआयामी स्वरूप सामने आता है। लेखक ने हिंदी को प्रेम की भाषा बताया तथा इस पुस्तक में हिंदी के प्रति उनका लगाव दिखता है।"* आयुष चेयर, डॉ. ईश शर्मा का कहना था कि *"कवि डॉ. जागासिंह का व्यक्तित्व पित्त प्रधान जान पड़ता है। उन्होंने अपना प्रतिरोध दर्शाया है।"* महात्मा गांधी संस्थान की हिंदी विभागाध्यक्षा, डॉ. अंजलि चिंतामणि ने 'भारत माता' और 'न्यारा देश हमारा' कविताओं पर विचाराभिव्यक्ति करते हुए बताया कि *"'न्यारा देश हमारा' एक आदर्शवादी कविता है। यदि हम कविता की गहराई में जाएँगे, तो कवि ने समाज की समस्याओं की ओर अप्रत्यक्ष रूप से संकेत किया है। 'भारत माता' कविता माँ की भाँति संरक्षण प्रदान करती है। माता हमेशा सुमाता बनकर रहती है।"*

डॉ. सोमदत्त काशीनाथ ने 'एक और निराला' एवं 'प्यार पुराना अपना' कविताओं पर अपने विचार देते हुए कहा *"कवि ने अपने एक साहित्यकार मित्र के संघर्षों की तुलना सुप्रसिद्ध छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के जीवन के कटु अनुभवों से की है। दोनों कविताओं में सरल भाषा में उत्तम विचारों की अभिव्यक्ति हुई है।"* हिंदी शिक्षिका एवं लेखिका, श्रीमती तीना जगू-मोहेश ने 'कोरोना' और 'रोना व्यर्थ है' कविताओं का विश्लेषण करते हुए कहा *"दोनों कविताओं को पढ़ते ही यह आभास होता है कि लेखक वास्तविकता के धरातल पर टिके हुए हैं। कवि की रचना में यथार्थ उपस्थित है।"*

महात्मा गांधी संस्थान की हिंदी व्याख्याता, डॉ. लक्ष्मी झमन ने 'पूज्य वासुदेव विष्णुदयाल' एवं 'श्री मोहनलाल मोहित' पर लिखी गयीं कविताओं के बारे में बताया कि *"दोनों कविताएँ देश के महापुरुषों पर आधारित हैं। कविताएँ सोयी हुईं आकांक्षाओं को जगाने वाली एवं लोगों के मन में साहस और त्याग के गुणों को जगाने वाली हैं। साथ ही, वे जातीय गौरवशाली इतिहास से हिंदी प्रेमियों को जोड़ने वाली कविताएँ हैं।"* डॉ. बीरसेन जागासिंह ने कहा कि *"मेरी रचनाएँ मेरे जीवन से*

प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई हैं। लेखक की सफलता उसी में है जब पढ़ने वाला अपने आप को उस रचना में पाता है।"

इस अवसर पर श्री राजेश्वर सितोहल, श्री मृणाल घुराऊ एवं सुश्री विदुषी बातू द्वारा इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ कृत 'वह आप्रवासी राम' का मंचन किया गया तथा श्री विशाल मंगरू ने डॉ. बीरसेन जागासिंह कृत 'जय हिंदी' कविता को संगीतबद्ध करके उसका मनोहरी गायन किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

भारत

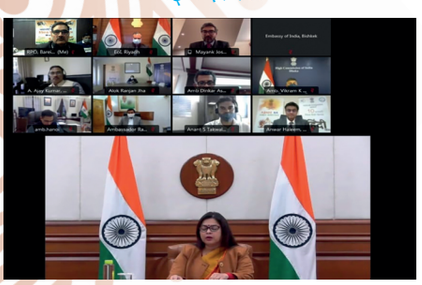
गुवाहाटी



10 जनवरी, 2022 को आज़ादी के अमृत महोत्सव के तहत भारतीय पर्यटन मंत्रालय (उत्तर पूर्व) ने गुवाहाटी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में विश्व हिंदी दिवस मनाया। समारोह का उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के बारे में जागरूकता फैलाना और बढ़ाना था। कार्यक्रम में अतिथि वक्ता संतोष कुमार उपाध्याय ने पर्यटन के क्षेत्र में हिंदी का एक अभिन्न भाषा बनने के संबंध में अपने विचार साझा किए। इस अवसर पर हिंदी में कविता-पाठ, गायन, नृत्य और भाषण की प्रस्तुतियाँ हुईं और प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। समारोह में कई शिक्षकों तथा छात्रों ने भाग लिया।

साभार : पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार का फ़ेसबुक पृष्ठ

नई दिल्ली



10 जनवरी, 2022 को विदेश मंत्रालय के नई दिल्ली स्थित कार्यालय में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर विदेश राज्य मंत्री माननीया श्रीमती मीनाक्षी लेखी की अध्यक्षता में विश्व हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में देश-विदेश से लगभग 160 कार्यालयों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसमें हिंदी में अच्छा कार्य करने के लिए पासपोर्ट कार्यालय बरेली को "क" क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार से अलंकृत किया गया।

साभार : आर.पी.ओ. बरेली का ट्वीटर पृष्ठ

वर्धा

10 जनवरी, 2022 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में 'हिंदी का वैश्विक परिप्रेक्ष्य' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने की। उन्होंने कहा कि विश्व के विभिन्न देशों में हिंदी के विविध रूप हैं, जिससे हिंदी को विश्व में पहचान मिली है। वक्ता के रूप में उपस्थित सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय की कुलपति, प्रो. नीरजा अरुण गुप्ता ने कहा कि हिंदी विश्व स्तर पर सुदृढ़ और स्थापित हुई है। नेपाल, फ़िजी, सूरीनाम, स्पेन आदि देशों में हिंदी बोलने और समझने वालों की संख्या बहुत बड़ी है तथा इस दृष्टि से हिंदी विश्व भाषा बनने की दिशा में अग्रसर है। उन्होंने हिंदी का विश्व में विस्तार करने में हिंदी फ़िल्मों, समाचार चैनलों और भारतीय विद्या भवन की भूमिका को विस्तार से व्याख्यायित किया।



अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद से सेवानिवृत्त, प्रो. एम. वेंकटेश्वर ने कहा कि मॉरीशस, फ़िजी आदि देशों में हिंदी के शिक्षण का विस्तार हुआ है। मीडियाकर्मी, हिंदी विद्वान और रंगकर्मी आदि भी हिंदी के विस्तार के महत्त्वपूर्ण कारक बने हैं।

कार्यक्रम की विषय-प्रस्तावना विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल ने की। उन्होंने कहा कि गिरमिटिया रोज़गार के बहाने विश्व के कई भागों में गए और उन्होंने मातृ-भाव, समर्पण और श्रद्धा से हिंदी को आगे बढ़ाया है। उन्होंने हिंदी को और विस्तार देने के लिए वैश्विक स्तर पर सक्षम व्यवस्था बनाने पर बल दिया।

कार्यक्रम का संचालन क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज के अकादमिक निदेशक, प्रो. अखिलेश कुमार दुबे ने किया तथा साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अवधेश कुमार ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में अध्यापक, शोधार्थी और विद्यार्थी जुड़े थे।

श्री बी. एस मिरगे की रिपोर्ट

विश्वभर में

अम्मान, जॉर्डन

10 जनवरी, 2022 को भारतीय दूतावास अम्मान, जॉर्डन में विश्व हिंदी दिवस भव्य रूप से मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में भारत के प्रधानमंत्री, माननीय श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिये गए संदेश से हुआ, जिसमें माननीय प्रधानमंत्री ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी को दैनिक व्यवहार एवं बोलचाल की भाषा बनाने पर बल दिया। भारत के राजदूत, महामहिम श्री अनवर हलीम ने सभा को सम्बोधित करते हुए माननीय प्रधानमंत्री के संदेश के आलोक में, हिंदी के प्रचार-प्रसार में अधिक भाग लेने का आह्वान किया व हिंदी को रोज़मर्रा की भाषा बनाने पर बल देते हुए सरल हिंदी व दैनिक बोलचाल वाली हिंदी का प्रयोग करने का आग्रह किया।



समारोह के दौरान दूतावास के अधिकारियों व हिंदी-भाषी भारतीयों ने हिंदी में अपने विचार प्रस्तुत किए एवं कविता-पाठ किया। भारतीय समुदाय के बच्चों ने भी हिंदी में अपनी प्रस्तुति दी। इस अवसर पर निबंध-लेखन, कविता-वाचन एवं श्रुतलेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया एवं विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

साभार : भारतीय दूतावास अम्मान, जॉर्डन का फ़ेसबुक पृष्ठ

बुडापेस्ट, हंगरी



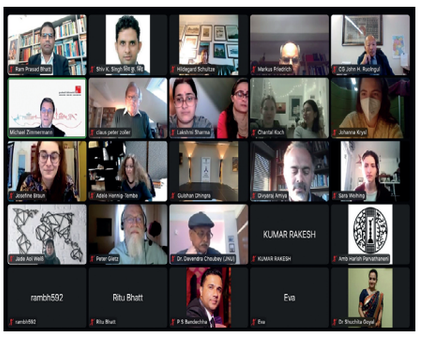
10 जनवरी, 2022 को भारतीय दूतावास, बुडापेस्ट, हंगरी में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर भारतीय विदेश मंत्री, माननीया श्रीमती मीनाक्षी लेखी का वीडियो संदेश प्रस्तुत किया गया। साथ ही, स्वर्गीय श्री रमन सुंदरम की स्मृति में भारतीय डायस्पोरा से हृदय लघटे को पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त कई अन्य बच्चों को हिंदी और भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान हिंदी छात्रों द्वारा हिंदी कविता और गीत प्रस्तुत किए गए और कथक नृत्य भी किया गया। समारोह में हंगरी के भारतीय समाज के सदस्यों तथा ई.एल.टी.ई विश्वविद्यालय के छात्रों ने भाग लिया।

साभार : भारतीय दूतावास, बुडापेस्ट, हंगरी का फ़ेसबुक पृष्ठ

हैम्बर्ग, जर्मनी

14 जनवरी 2022 को आभासी मंच पर हैम्बर्ग विश्वविद्यालय के भारत-विद्या विभाग ने भारतीय कौंसलावास हैम्बर्ग के सहयोग से विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जर्मनी में भारत के महामहिम राजदूत श्री हरीश पर्वथानेनी ने की।



प्रो. फ़्रीडरिख ने संस्कृत एवं हिंदी भाषाओं के अध्ययन के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि *"भारत, भारतीय संस्कृति और भारतीय भाषाओं के अध्ययन का महत्त्व इस बात से लगाया जा सकता है कि हैम्बर्ग में भारत-विद्या विभाग ने अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष 2014 में मनाया और हिंदी का शताब्दी वर्ष 2022 में मनाया जा रहा है।"*

माननीय राजदूत प्रवथानेनी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि *"विश्व हिंदी दिवस हर साल 10 जनवरी को मनाया जाता है, जो 1975 में आयोजित पहले विश्व हिंदी सम्मेलन की वर्षगाँठ को चिह्नित करता है। तब से, भारत, मॉरीशस, त्रिनिदाद और टोबैगो, संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम जैसे विभिन्न देशों में विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किए गए हैं। इनका उद्देश्य दुनिया भर में हिंदी भाषा के उपयोग को बढ़ावा देना है।"*

डिजिटल मीडिया का आगमन और ऑनलाइन प्रकाशन एवं सोशल मीडिया की चर्चा करते हुए अध्यक्ष महोदय ने कहा कि *"पिछले कुछ दशकों में हिंदी पाठक बड़ी संख्या में ऑनलाइन सामग्री की ओर मुड़ गए हैं। डिजिटल मीडिया और ऑनलाइन प्रकाशन भाषा के प्रसार और संरक्षण में योगदान दे रहे हैं। हिंदी एक जीवित भाषा है, जो अभी भी विकसित हो रही है। यह भारतीय पहचान का प्रतीक है और भारत में एकमात्र ऐसी भाषा है, जो पूरे देश को एकजुट करने की क्षमता रखती है।"*

प्रो. माइकल त्सिम्मरमन ने हैम्बर्ग विश्वविद्यालय में भारत-विद्या विभाग एवं संस्कृत व हिंदी के शिक्षण एवं शोध की परंपरा और उसके इतिहास के बारे में विस्तार से बताया। वाइस कौंसुल, श्री गुलशन ढींगरा ने भारत के माननीय प्रधानमंत्री का संदेश प्रस्तुत किया, जिसके उपरान्त भारत के विदेश मंत्री एवं विदेश राज्यमंत्री के संदेश सुनाए गए। वरिष्ठ भारतीय पत्रकार कुमार राकेश ने 'भारतीय पत्रकारिता में हिंदी प्रयोग और पत्रकारिता के माध्यम से हिंदी प्रसार' पर वक्तव्य देते हुए बताया कि भारत में वर्तमान सरकार की नीतियों के कारण हिंदी का प्रसार और प्रयोग बढ़ रहा है, जो एक सुखद समाचार है।

भारतविद् एवं हिंदी के प्रोफ़ेसर क्लाउस पीटर जोलर ने यूरोप में भारत-विद्या एवं हिंदी के शिक्षण पर विस्तार से अपने विचार रखे और यूरोप में अनेक विश्वविद्यालयों में भारत-विद्या विभाग के बंद हो जाने पर चिंता व्यक्त की। कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने सरस्वती-वंदना, ओडिसी नृत्य-प्रस्तुति, तबला संगीत प्रस्तुति, स्वलिखित एकांकी प्रस्तुति और स्वलिखित निबंध-पाठ किया तथा प्रवासी बच्चों ने संस्कृत मंत्रों का पाठ किया। इस समारोह में जर्मनी से बाहर पुर्तगाल, हंगरी, भारत, हॉलैंड जैसे देशों से लोगों ने भाग लिया था। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद-ज्ञापन भारत-विद्या विभाग से डॉ. राम प्रसाद भट्ट ने किया।

डॉ. राम प्रसाद भट्ट का फ़ेसबुक पृष्ठ

काठमांडू, नेपाल



10 जनवरी 2022 को हॉटल 3 एडिशन में भारतीय राजदूतावास, काठमांडू एवं स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र ने संयुक्त रूप से विश्व हिंदी दिवस मनाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सूचना एवं संस्कृति विभाग के प्रेस प्रमुख, श्री नवीन कुमार ने की।

समारोह के मुख्य अतिथि, नेपाल के वरिष्ठ हिंदी लेखक, श्री राम दयाल राकेश रहे तथा नेपाल के प्रतिष्ठान परिषद् से प्रो. उषा ठाकुर विशिष्ट अतिथि रहीं। श्री राम दयाल राकेश ने अपने उद्बोधन में कहा कि सदियों से भारत और नेपाल की मित्रता में हिंदी भाषा की अहम भूमिका रही है। इस अवसर पर हास्य कवि सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें श्री सुदीप भोला, श्री विनीत पांडेय तथा श्री अभिषेक त्रिपाठी ने कविता-पाठ किया। साथ ही, विभिन्न पाठशालाओं से 10 विद्यार्थियों ने हिंदी में कविता-पाठ किया, जिसके लिए उनको पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त हिंदी मासिक पत्रिका 'द पब्लिक' के सम्पादक श्रीमती वीणा सिन्हा द्वारा रचित लघुकथा-संग्रह 'सुनासन गलीहरु' का लोकार्पण किया गया। स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र के संगीत के छात्रों द्वारा सुमधुर प्रस्तुति भी हुई।

साभार : भारतीय दूतावास, काठमांडू, नेपाल का फ़ेसबुक पृष्ठ

कीव, यूक्रेन



10 जनवरी, 2022 को भारतीय राजदूतावास, कीव, यूक्रेन के सभागार में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में टारस शेवचेंको नेशनल यूनिवर्सिटी, राष्ट्रीय भाषाई विश्वविद्यालय, कीव और कीव जिमनैज़ियम स्कूल नंबर 1 के हिंदी शिक्षकों एवं छात्रों ने भाग लिया।

इस अवसर पर राजदूतावास द्वारा आयोजित हिंदी वाद-विवाद और कविता-पाठ प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। यूक्रेन में हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान देने वाले हिंदी शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया।

साभार : भारतीय राजदूतावास, कीव, यूक्रेन का फ़ेसबुक पृष्ठ

नायरोबी, कीनिया



10 जनवरी, 2022 को भारतीय उच्चायोग, नायरोबी, कीनिया तथा पूर्वी अफ़्रीका की हिंदी समिति के समन्वित सहयोग से बड़े उत्साह के साथ विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष, श्री अरविंदर मेहता द्वारा कविता-पाठ के बाद, कई कवियों एवं गायकों ने हिंदी में अपनी प्रस्तुतियाँ दीं, जिनमें विभांशु शर्मा, देवर्ष सिन्हा, अनुषा गुप्ता, सरिता शर्मा, रूही सिंह, स्वस्ति सिन्हा, अंजलि बजाज, संजय ओबेरॉय, पिंकी कौल, मनीषा कंथालिया और कनिका वालिया सम्मिलित थे। समिति के उपाध्यक्ष श्री रवि कौल ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

साभार : भारतीय उच्चायोग, नायरोबी, कीनिया का फ़ेसबुक पृष्ठ

पारामारिबो, सूरीनाम



10 जनवरी 2022 को स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, पारामारिबो, सूरीनाम में विश्व हिंदी

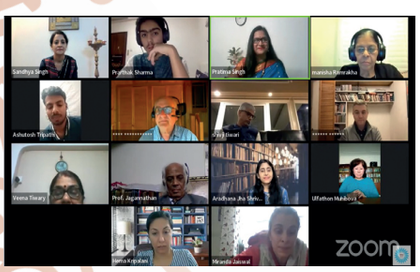
दिवस मनाया गया। हिंदी विद्वान, श्री धीरज कंधाई, हिंदी अध्यापिका, सुश्री प्रभा बालगोबिंद, हिंदी छात्र, सुश्री नम्रता बरोही एवं द्वितीय सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा और एसवीसीसी के कार्यवाहक निदेशक ने हिंदी में कविता-पाठ किया।

समारोह में निबंध और कविता प्रतियोगिताओं के 13 विजेताओं को राजदूत, श्री शंकर बालचंद्रन द्वारा प्रमाण-पत्र और नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम के दौरान एसवीसीसी की कथक गुरु सुश्री अंजना कुमारी द्वारा तथा कथक कक्षा की तीन छात्राओं द्वारा नृत्य प्रस्तुतियाँ हुईं। समारोह का संचालन एवं धन्यवाद-ज्ञापन भारतीय दूतावास की सांस्कृतिक अधिकारी, सुश्री अंजु शर्मा द्वारा किया गया इस कार्यक्रम में अधिकारियों और उनके परिवार के सदस्यों सहित विभिन्न समाज क्षेत्रों से 60 से अधिक हिंदी प्रेमी शामिल हुए।

साभार : भारतीय दूतावास, पारामारिबो, सूरीनाम का फ़ेसबुक पृष्ठ

सिंगापुर

10 जनवरी, 2022 को विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय उच्चायोग सिंगापुर के तत्वावधान तथा विश्व हिंदी सचिवालय के सहयोग से सिंगापुर संगम द्वारा 'विश्व हिंदी का वर्तमान स्वरूप और संभावनाएँ' विषय पर अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया।



समारोह के मुख्य अतिथि भारतीय उच्चायोग, सिंगापुर के चांसरी प्रमुख, श्री शिवजी तिवारी रहे। ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी, ऑस्ट्रेलिया से डॉ. पीटर फ्रिडलैंडर, उप्साला विश्वविद्यालय, स्वीडन से प्रो. हाइंस वरनर वेस्लर, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, अमेरिका से डॉ. रिचर्ड डिलेसी, ताश्कंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑव ओरिएंटल स्टडीज़, उज़्बेकिस्तान से प्रो. उल्फ़त मुहिबोवा तथा यूनिवर्सिटी ऑव फ़िजी से श्रीमती मनीषा रामरक्खा विशिष्ट अतिथि रहे।

श्री शिवजी तिवारी ने विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में अपने सम्बोधन में कहा कि *"प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन से लेकर अब तक 47 वर्षों में हिंदी के प्रचार-प्रसार, अनुराग, जागरूकता, अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में विकसित करने के प्रयास तथा हिंदी के सम्पूर्ण वातावरण को स्थापित करने में हमने जो प्रगति की है, वह अत्यंत सराहनीय है।"* उन्होंने यह भी कहा कि डिजिटल प्रणाली के माध्यम से हिंदी को एक गति मिली है।

डॉ. पीटर फ्रिडलैंडर ने अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि *"हिंदी एक वैश्विक भाषा बन गई है, क्योंकि हम दुनिया में हिंदी में एक-दूसरे से बातचीत करते हैं।"* उन्होंने बताया कि आज के संदर्भ में विश्व हिंदी दिवस सभी को याद दिलाता है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डिजिटल माध्यम द्वारा एक-दूसरे से सम्पर्क किया जा सकता है।

प्रो. हाइंस वरनर वेस्लर ने विश्व में हिंदी के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा कि *"आज यूरोप में आधुनिक हिंदी तथा आधुनिक साहित्य के प्रति रुझान बढ़ रहा है। अब ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से छात्र हिंदी सीखने में रुचि रखते हैं। यदि हिंदी के माध्यम से नौकरी प्राप्त करने के रास्ते अधिक खुलेंगे तो ज़्यादा छात्र हिंदी से जुड़ेंगे।"* उन्होंने हिंदी को अपनी पहचान को अभिव्यक्त करने का माध्यम बताया।

डॉ. रिचर्ड डिलेसी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि *"बोलचाल की भाषा में एकरूपता नहीं है तथा वह नदी के प्रवाह के समान है। मीडिया की भाषा बदलती जा रही है, क्योंकि भाषा सामाजिक व्यवहार है और समाज व्यक्तियों से बनता है।"* उन्होंने अमेरिका में द्वितीय भाषा के स्वरूप पर भी प्रकाश डाला।

प्रो. उल्फ़त मुहिबोवा ने विषय पर बात करते हुए कहा कि पूरे उज़्बेकिस्तान में खासकर बॉलीवुड फ़िल्मों के कारण हिंदी के प्रति रुचि है। उन्होंने कहा कि *"विदेशों में हिंदी का महत्त्व काफ़ी बढ़ रहा है। पाठशालाओं एवं उच्च शिक्षा संस्थाओं में हिंदी पढ़ाई जा रही है। साथ ही, भारतीय संगीत एवं कला से प्रेरित होकर उज़्बेकिस्तान में भारत के प्रति रुचि बढ़ती जा रही है।"*

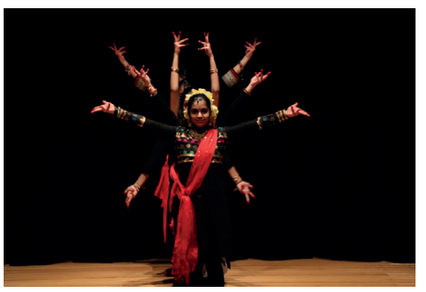
श्रीमती मनीषा रामरक्खा ने हिंदी की वास्तविकता पर अपने विचार प्रकट किए। उन्होंने कहा *"वर्तमान समय में हिंदी के महत्त्व को समझना और हिंदी के प्रगतिशील भविष्य पर विचार-विमर्श करना अति आवश्यक है। मातृभाषा संस्कृति की वाहिका है। मातृभाषा के सहयोग से ही शिक्षा एक व्यक्ति को सुयोग्य, विनम्र और सम्माननीय नागरिक बनाने में सक्षम हो सकती है। हिंदी हमें व्यावहारिकता सिखाती है। फ़िजी में बहुत से शोध-कार्य भी हो रहे हैं, जो हिंदी के बढ़ते स्वरूप को उजागर करते हैं।"*

कार्यक्रम के दौरान, छात्रा सुश्री वल्लियम्मई द्वारा भरतनाट्यम् नृत्य-प्रस्तुति, सुश्री रिया नेमा द्वारा भजन-गायन तथा सुश्री अनाया राय एवं सुश्री जिया राय द्वारा कविता पर नृत्य-प्रस्तुति की गयी।

समारोह में कई हिंदी प्रेमियों ने भाग लिया। मंच-संचालन ग्लोबल इंटरनेशनल स्कूल के छात्र श्री प्रार्थक शर्मा एवं श्रीमती प्रतिमा सिंह ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. संध्या सिंह ने किया।

साभार : सिंगापुर संगम

टोक्यो



10 जनवरी, 2022 को भारतीय दूतावास, टोक्यो के विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र सभागार में भव्य रूप से विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी एवं विदेश मंत्री श्री सु. जयशंकर के सन्देश तथा जापान में भारत के राजदूत महामहिम श्री संजय कुमार वर्मा के भाषण से हुआ।

इसी क्रम में टोक्यो विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष, प्रो. योशिफुमि मिज़ुनो ने जापान और भारत के संबंधों को सुदृढ़ करने में हिंदी की भूमिका पर प्रकाश डाला। इंडियन इंटरनेशनल स्कूल ऑफ़ जापान और ग्लोबल इंडियन इंटरनेशनल स्कूल, जापान के विद्यार्थियों ने हिंदी के इतिहास एवं विकास पर आधारित नुक्कड़ नाटक, नृत्य तथा अन्य रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इस अवसर पर टोक्यो विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय के जापानी छात्रों ने "अँधा युग" नामक हिंदी नाटक के संवादों एवं कत्थक नृत्य की प्रस्तुति की।

साभार : भारतीय दूतावास, टोक्यो का फ़ेसबुक पृष्ठ

वैंकूवर, कनाडा



11 मार्च, 2022 को भारत के प्रधान कौंसुलावास, वैंकूवर द्वारा भव्य रूप से विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। कौंसिल जनरल, श्री मनीष ने अपने भाषण में दैनिक जीवन में हिंदी के प्रयोग की आवश्यकता पर बल दिया। तत्पश्चात्, दस हिंदी प्रचार संघों के प्रवासी सदस्यों, उनके बच्चों और बर्नाबी गणेश हिंदी स्कूल के शिक्षकों और छात्रों ने देशभक्ति, होली का त्योहार, सुभाष चंद्र बोस, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई आदि विभिन्न विषयों पर हिंदी में कविताओं का पाठ किया। इस अवसर पर कलाकारों द्वारा हिंदी गीत पर एक नृत्य प्रदर्शन तथा बॉलीवुड और होली गीतों का फ़्यूज़न प्रस्तुत किया गया।

साभार : भारत के प्रधान कौंसुलावास, वैंकूवर का फ़ेसबुक पृष्ठ

विक्टोरिया, सेशेल्स



10 जनवरी, 2022 को भारतीय उच्चायोग, विक्टोरिया (माहे) सेशेल्स द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में उच्चायुक्त जनरल दलबीर सिंह सुहाग ने अपने सम्बोधन में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की बात की और विदेशों में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया। हिंदी में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गयी थी, जिसमें लगभग 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इनमें से कुछ प्रतिभागियों ने समारोह में कविता-पाठ किया। प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार प्राप्त करने वालों को नकद पुरस्कार व प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए। हिंदी प्रश्नोत्तरी में प्रत्येक प्रश्न के प्रथम सही उत्तर देने वाले को पुरस्कृत किया गया। समारोह में सेशेल्स के हिंदी प्रेमियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

साभार : भारतीय उच्चायोग, विक्टोरिया, सेशेल्स का फ़ेसबुक पृष्ठ

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का 14वाँ आधिकारिक कार्यारंभ दिवस

11 फ़रवरी, 2022 को शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में और कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय तथा महात्मा गांधी संस्थान के सहयोग से विश्व हिंदी सचिवालय ने अपने सभागार, फ़ेनिक्स में अपना 14वाँ आधिकारिक कार्यारंभ दिवस भव्य रूप से मनाया। प्रथम सत्र में कार्यारंभ दिवस समारोह मनाया गया तथा द्वितीय सत्र में *'प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी साहित्य का शिक्षण'* विषय पर ऑनलाइन कार्यशाला आयोजित की गयी।

आधिकारिक कार्यारंभ दिवस समारोह



प्रथम सत्र का शुभारंभ दीप-प्रज्वलन तथा मॉरीशस और भारत के राष्ट्रगान से हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री पृथ्वीराजसिंह रूपन, जी.सी.एस.के. रहे। मॉरीशस की भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्रीमती के. नंदिनी सिंग्ला भी समारोह में उपस्थित थीं। इस वर्ष कार्यारंभ दिवस के अवसर पर बीज-वक्ता के रूप में स्थानीय भाषा एवं अभिगम्यता माइक्रोसॉफ़्ट के निदेशक, श्री बालेंदु शर्मा दाधीच ने वीडियो रिकॉर्डिंग के माध्यम से अतिथियों को संबोधित किया।



महामहिम श्री पृथ्वीराजसिंह रूपन ने सभी को आधिकारिक कार्यारंभ दिवस की शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने सचिवालय की उपलब्धियों की सराहना की तथा हिंदी का प्रचार कर रहीं सभी संस्थाओं को बधाई दी। उन्होंने हिंदी के महत्त्व को उजागर करते हुए कहा *"आज हिंदी हम सब के बीच जीवित है। आज बैठकाओं से निकलकर हिंदी भाषा विश्वविद्यालय तक पहुँच गई है। मैं आश्वासन देता हूँ कि मॉरीशस सरकार हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में अपना पूर्ण सहयोग देगी।"*



महामहिम श्रीमती के. नंदिनी सिंग्ला ने इस अवसर पर सभागार को संबोधित करते हुए कहा कि *"14 वर्षों के संघर्षों के पश्चात् आज सचिवालय एक सुदृढ़ संस्था के समान है। सचिवालय की स्थापना का स्वप्न देखनेवालों को मैं नमन करती हूँ।"* उन्होंने मॉरीशस की स्थानीय हिंदी कहानियों का अनुवाद फ़्रेंच, अंग्रेज़ी और क्रियोल भाषाओं में करने तथा सोशल मीडिया के माध्यम से अधिक-से-अधिक लोगों को हिंदी से जोड़ने का भी सुझाव दिया।



श्री बालेंदु शर्मा दाधीच ने 'प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी साहित्य का शिक्षण' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने आधुनिक युग में प्रौद्योगिकी के महत्त्व पर बल देते हुए कहा *"यदि हम अकादमिक या शैक्षणिक कार्यों के लिए विश्वसनीय सामग्री की तलाश कर रहे हैं, तो आधुनिक तकनीकों का परिचय होना आवश्यक है। प्रौद्योगिकी की जानकारी सिर्फ़ शैक्षणिक उद्देश्यों से ही नहीं, अपितु आज के युग में प्रासंगिक बने रहने के लिए भी आवश्यक है।"*

कार्यक्रम के आरंभ में विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने उपस्थित महानुभावों तथा हिंदी प्रेमियों का स्वागत किया और



आधिकारिक कार्यारंभ दिवस मनाने के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। साथ ही, उन्होंने वित्तीय वर्ष 2021 में आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों का उल्लेख किया और सचिवालय की भावी गतिविधियों की चर्चा की।



समारोह के दौरान साहित्यकार श्रीमती कल्पना लालजी की पुस्तक 'अपराजिता' का लोकार्पण मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया। सचिवालय की वार्षिक साहित्यिक हिंदी पत्रिका 'विश्व हिंदी साहित्य' के चतुर्थ अंक का भी विमोचन किया गया।



इस अवसर पर महात्मा गांधी संस्थान में गायन विभागाध्यक्षा, डॉ. अनीता शिवगुलाम तथा गायन कलाकार श्रीमती ललिता गोपी, सुश्री प्रियंवदा चतुआर, श्री यशवंत जूरन एवं श्री परमेश प्रयाग ने मॉरीशस के प्रसिद्ध हिंदी कवि डॉ. हेमराज सुंदर द्वारा रचित हिंदी गीत 'हिंदी हमारी पहचान है' का गान किया।



त्रिनेत्रा आर्ट्स की तीन नृत्य कलाकार, सुश्री बेला रामधारी, श्रीमती प्रेमा बसगीत एवं सुश्री खुशबू रामधारी ने हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि कबीरदास के दोहों पर आधारित सुन्दर नृत्य की प्रस्तुति की।

समारोह के अंतर्गत मॉरीशस ब्रॉडकॉस्टिंग कोर्पोरेशन के तीन मीडिया कर्मी, श्री रितेश मोहाबीर, सुश्री पूजा रामदावर एवं सुश्री थावनी बसगीत ने साहित्यकार श्रीमती कल्पना लालजी कृत 'टीस' कहानी के कथानक को अभिनीत करके दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।



हिंदी दिवस 2021 के संदर्भ में भारतीय उच्चायोग द्वारा प्राथमिक, माध्यमिक और विश्वविद्यालयीय स्तर के विद्यार्थियों के लिए आयोजित कहानी कथन प्रतियोगिता के 5 विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। प्राथमिक स्तर पर विजेता के रूप में नोर्थलैंड्स प्राथमिक पाठशाला की छठी कक्षा की कुमारी युक्ता देवी ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। माध्यमिक स्तर पर डी.आर.एस.सी की ग्यारहवी कक्षा की कुमारी बुधना हर्षिता सिद्धि ने तथा विश्वविद्यालयीय स्तर पर विद्यार्थी श्री सत्यवीर सर्वेश कुंजा ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। विजेताओं की कहानियों को वीडियो द्वारा प्रस्तुत किया गया।



मंच-संचालन एवं धन्यवाद-ज्ञापन विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने किया।

ऑनलाइन कार्यशाला

विश्व हिंदी सचिवालय के 14वें आधिकारिक कार्यारंभ दिवस समारोह के द्वितीय सत्र में ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के प्रथम सत्र में श्री बालेंदु शर्मा दाधीच ने प्रौद्योगिकी के उपयोग के विभिन्न लाभों पर चर्चा करते हुए कहा कि 'शिक्षा के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण होती जा रही है।' उन्होंने हिंदी पद्य के शिक्षण में तकनीक के प्रयोग की चर्चा करते हुए कहा कि *"आज कम्प्यूटर तथा मोबाइल फ़ोन में टेक्स्ट डिस्प्ले, टेक्स्ट इनपुट, लोकलाइज़ेशन, लैंग्वेज युटिलिटिज तथा एवरीडे ए.आई द्वारा किसी भी भाषा के टेक्स्ट को पढ़ना कोई चुनौती नहीं रह गई है। अपने कम्प्यूटर या मोबाइल में टाइप करना भी कोई चुनौती नहीं है। विंडोज़ को हिंदी में बदलना अब संभव है। कम्प्यूटर पर वर्तनी की जाँच की जा सकती है तथा बोलकर भी टाइप किया जा सकता है।"* उन्होंने बताया कि टेक्स्ट इनपुट, स्पेलिंग चैक, स्पीच आउटपुट आदि से अभ्यास-कार्य तैयार करना या प्रश्नपत्रों का निर्माण करना संभव हो गया है। हिंदी में इमेल टाइप करना, चैट्स का प्रयोग करना, इमेल अड्रेस तैयार करना और इंटरनेट की सामग्रियों का हिंदी में अनुवाद करना भी संभव है। श्री बालेंदु दाधीच ने हिंदी में फ़ॉन्ट परिवर्तित करने, पी.डी.एफ़. को टेक्स्ट में बदलने और बोलकर टाइप करने के लिए लिंक्स भी दिए।

द्वितीय सत्र में हिंदी गद्य के शिक्षण में तकनीक के प्रयोग संबंधी जानकारियाँ दी गयीं। ऑनलाइन शिक्षण और शोध के लिए एकेडमिया, माइक्रोसॉफ़्ट फ़ॉर्म्स आदि का सहारा लेने का परामर्श दिया गया। ऑनलाइन माध्यमों की प्रामाणिकता जाँचने के लिए लिंक की जाँच करने अथवा लेखक से संबंधित अद्यतन जानकारियाँ प्राप्त करने की सलाह दी गयी। श्री बालेंदु दाधीच ने साहित्य के शिक्षण के लिए भी अपनी माटी.कॉम, ई ज्ञान कोश. कॉम, ई ज्ञान दीप.कॉम आदि लिंक्स दिए, जिनपर साहित्यिक सामग्रियाँ उपलब्ध हैं।

परिचर्चा-सत्र के अंतर्गत प्रश्नोत्तर हुआ और शंकाओं का समाधान किया गया।

मंच-संचालन हिंदी शिक्षिका (माध्यमिक) श्रीमती विजेता देवी भागी-जवाहिर ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन हिंदी शिक्षक (माध्यमिक) श्री धरमवीर गंगू ने किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

संवाद उत्सव



23 मार्च, 2022 को शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में तथा कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय के सहयोग से विश्व हिंदी सचिवालय के सभागार, फ़ेनिक्स में संवाद उत्सव का आयोजन किया गया।

समारोह के आरम्भ में विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने सभागार में उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। स्वागत-वक्तव्य देते हुए उन्होंने कहा कि *"हिंदी की उद्भुत विशेषता यह है कि यह धरती के जिस भाग में भी पहुँची, वहाँ संवाद की भाषा बनकर उसने अपनी निरंतरता बनाए रखी। कठिन परिस्थितियों में भी हिंदी की प्रगति नहीं रुकी, क्योंकि अनगिनत लोग यह अनुभव करते हैं कि हिंदी में अपने सुख-दुख तथा विचारों की अभिव्यक्ति करना बहुत आसान है। भाषा की संप्रेषणीयता ही हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति है।"* डॉ. माधुरी रामधारी ने विश्व हिंदी सचिवालय की पूर्व एवं भावी योजनाओं का भी उल्लेख किया।



समारोह के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय एकीकरण एवं अंतरराष्ट्रीय व्यापार मंत्री, माननीय श्री आलान गानू ने अपने वक्तव्य में कहा कि *"इन संवाद प्रस्तुतियों के माध्यम से विभिन्न सामाजिक मुद्दों के प्रति युवाओं की जागरूकता को हम देख पा रहे हैं। साथ ही, भाषा तथा संस्कृति को पहचानने की उनकी क्षमता की झलक भी मिल रही है।"* उन्होंने मॉरीशस में हिंदी के इतिहास पर अपने विचार देते हुए कहा *"अन्य भाषाओं की तरह हिंदी को भी मान्यता प्राप्त करने हेतु अनेक चरणों से गुज़रना पड़ा। आज जब मॉरीशस और भारत अपने राजनयिक और सांस्कृतिक संबंधों की स्थापना की 75वीं वर्षगाँठ मना रहे हैं, तब मॉरीशस में हिंदी भाषा के उपयोग और प्रसार को और भी अधिक प्रमुखता दी जा रही है। हिंदी सीखने का अर्थ सांस्कृतिक मूल्यों को भी सीखना होता है। प्रत्येक छात्र अपनी हिंदी कक्षा में सीखे गए अच्छे विचारों और नैतिक मूल्यों को अपने व्यावहारिक जीवन में ढाल सकता है और अन्यों के लिए उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है।"*





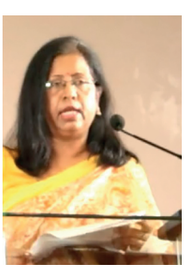
भारतीय उच्चायुक्त, मॉरीशस महामहिम श्रीमती के. नंदिनी सिंग्ला ने अपने वक्तव्य में संवाद प्रस्तुति में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को साधुवाद तथा बधाई दी। उन्होंने कहा कि *"मुझे बहुत खुशी हुई कि छात्रों ने हिंदी में बातचीत की और उन्होंने संवाद के लिए जिन मुद्दों का चयन किया, वे मनुष्य के व्यक्तिगत विकास के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।"* उन्होंने सचिवालय के कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा *"सचिवालय ना केवल हिंदी का प्रचार-प्रसार कर रहा है, बल्कि*

समाजिक परिवर्तन के लिए भी कार्य कर रहा है। संवाद वह कसौटी है, जिसपर हम भाषा की प्रगति का सरल ढंग से आकलन कर सकते हैं। मॉरीशस में स्थित बैठकाओं में हिंदी का पठन-पाठन, स्कूलों एवं कॉलिजों में हो रहे हिंदी-शिक्षण के अनुपूरक हैं।" भारतीय उच्चायुक्त ने बैठकाओं को और सुदृढ़ बनाने में भारत व मॉरीशस की सरकारों की योजनाओं का भी उल्लेख किया।

कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय की स्थायी सचिव, डॉ. लीला देवी लकीनारायण ने अपने वक्तव्य में संवाद-उत्सव की रोचकता का रेखांकन किया। उन्होंने कहा कि *"संवाद-उत्सव एक बहुत ही रचनात्मक गतिविधि है। संवाद करने में बच्चों को बोलचाल का अभ्यास करना होता है और मंच पर आने का डर भाग जाता है। आज सांस्कृतिक मूल्यों और हिंदी की शिक्षा को स्थापित करने के लिए बैठकाओं को पुनर्जीवित करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण बन गया है। छात्रों को नए ढंग से वैज्ञानिक और तकनीकी उपकरणों की सहायता से हिंदी सिखानी चाहिए। इसके साथ ही, हमें यह भी सोचना चाहिए कि हिंदी भाषा रोटी कमाने का विषय भी बन सके।"*



शिक्षा मंत्रालय की स्थायी सचिव, श्रीमती शबिना लोतन ने अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि *"भाषा सही अर्थों में तभी जीवित रहती है जब उसे संवाद का रूप दिया जाता है। इससे ना केवल भाषा का विकास होता है, बल्कि हमारे सोचने, सुनने और बोलने की शक्ति का भी विकास होता है।"* उन्होंने विभिन्न संवाद प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए इस प्रकार के आयोजनों में शिक्षा मंत्रालय के सहयोग का आश्वासन भी दिया।





इस अवसर पर विभिन्न सामाजिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के विद्यार्थियों ने हिंदी में संवाद की प्रस्तुति की। सर्वप्रथम हिंदी प्रचारिणी सभा के छात्रों द्वारा 'नारी शक्ति-स्वरूपा बने, सम्माननीय बने' नामक संवाद प्रस्तुत किया गया, जिसमें सुश्री तृष्णा बिद्यावती बत्तू, श्री वेदांश हलखोरी एवं सुश्री



रवीना वोरीशा रामसर्न ने भाग लिया। इस संवाद में नारी को शक्ति का प्रतीक बताया गया तथा उसे सदैव सम्मान का पात्र मानने का संदेश दिया गया।

तत्पश्चात् मॉरीशस के पाई आर्य समाज के छात्रों द्वारा 'सदा खुश रहें' विषय पर वीडियो रिकॉर्डिंग के माध्यम से संवाद की प्रस्तुति हुई। इसमें श्री निर्मल शर्मा सीचर्न तथा सुश्री श्रुति प्रेरणा सीचर्न ने भाग लिया। उन्होंने मतभेद के बादजूद एक-दूसरे के विचारों का सम्मान करने का संदेश दिया।



अगला संवाद मॉरीशस हिंदी इंस्टिट्यूट, त्रिओले के छात्रों ने 'लड़का-लड़की एक समान' शीर्षक पर प्रस्तुत किया। इसमें सुश्री तनुश्री रघुबेर, सुश्री वंशिका गोकुला एवं श्री कृष्णव रघुबेर ने भाग लिया। इस संवाद में लड़के और लड़की को एक समान मानने तथा अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार कार्य करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया।



इसके बाद हिंदी साहित्य सम्मेलन, लालमाटी के छात्रों ने 'दयालु व्यक्ति संसार का श्रेष्ठ मानव है' पर अपना संवाद प्रस्तुत किया, जिसमें श्री आयुष बलदान एवं श्री नंदिकेश नोगावा ने भाग लिया। इस प्रस्तुति में छोटे-बड़े, सभी के प्रति दया-भाव रखने के महत्त्व को उजागर किया गया।



सरस्वती हिंदी पाठशाला, कार्चिये मिलीतेर के छात्रों ने 'संगच्छध्वं : हम साथ चलें' विषय पर संवाद की प्रस्तुति की, जिसमें सुश्री जीनीशा जीतन एवं सुश्री हंसी रामधनी ने भाग लिया। इस प्रस्तुति में साथ मिलकर काम करते हुए प्रगति करने का संदेश दिया गया।

अपर दागोचियर आर्य वैदिक गहलोत राजपूत पाठशाला के छात्रों ने 'आत्म-रक्षा' विषय पर वार्तालाप की प्रस्तुति की। इसमें सुश्री आशिता देवी रामझीतन एवं सुश्री लेविश्का देवी तिलोकी ने भाग लिया। इस संवाद में छात्रों ने हिम्मत न हारने तथा स्वयं अपनी रक्षा करने का प्रोत्साहन दिया।



अगला संवाद बुआ शेरी आर्य रविवेद हिंदी पाठशाला के विद्यार्थियों ने 'मन का संकल्प हो अटल' विषय पर प्रस्तुत किया। इसमें सुश्री रश्मिका गुरसोहाय एवं सुश्री तेजस्विनी संचित ने भाग लिया। इस संवाद में पारिवारिक संगठन का महत्त्व बताया गया।



इसके अतिरिक्त साउथर्न वेव्ज़ हिंदी पाठशाला, रिवियेर दे क्रेओल के शिक्षार्थियों द्वारा 'कौन देगा इस प्रश्न का उत्तर' पर एक वार्तालाप हुआ। सुश्री खुशी देवी भूतुआ, सुश्री तपस्विनी राय रसिक एवं सुश्री पार्वती गोकुल ने इसमें भाग लिया और लड़कियों का अनादर करने वालों पर प्रश्न उठाया गया।



इसके उपरांत स्वामी श्रद्धानंद हिंदी पाठशाला, सुयाक के छात्रों ने 'आइए! जीवन में बनाएँ एक संतुलन' विषय पर अपने वार्तालाप से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रतिभागी श्री वत्सिन बिंदा एवं

सुश्री संजना सुकाल थे। उन्होंने योग द्वारा जीवन में संतुलन बनाए रखने की चर्चा की।

अगला संवाद वाक्वा सांस्कृतिक सभा की हिंदी पाठशाला की छात्राओं ने प्रस्तुत किया। इस वार्तालाप का शीर्षक 'उचित समय पर सही संकल्प' था, सुश्री कीर्ति रघुबर एवं सुश्री केशिका गुरबिन ने जीवन में समय का सदुपयोग करने का संदेश दिया।



इसके पश्चात् बृंदावन मल्टि-पर्पोस एजुकेशनल एसोसिएशन के छात्रों ने 'उदासी' विषय पर वार्तालाप प्रस्तुत किया, जिसके दौरान सुश्री मीठी किश्तो एवं श्री रेशव लखन ने दूसरों का कष्ट दूर करने तथा उनकी खोयी हुई खुशी को वापस लाने की प्रेरणा दी।



अंतिम प्रस्तुति शिवोपासक सभा हिंदी पाठशाला, लुई नेलाँ सरकारी पाठशाला, ला लुईज़ के छात्रों द्वारा हुई। यह वार्तालाप 'चलो एक साथ फ़ुटबॉल खेलें' शीर्षक पर आधारित था। श्री आयुष दुकन एवं सुश्री धर्मिष्ठा दुकन ने इसमें भाग लिया। इसमें यह संदेश दिया गया कि यदि मन में विश्वास हो, तो हर कार्य संभव हो सकता है।

संवाद उत्सव में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को प्रतिभागिता का प्रमाण-पत्र तथा छात्रों को तैयार करने वाले हिंदी शिक्षकों को अभिनंदन-पत्र प्रदान किये गये। इसके अतिरिक्त बैठकाओं के पुस्तकालयों के लिए पुस्तकें प्रदान की गईं। मंच-संचालन और धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. माधुरी रामधारी ने किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

अमृत सृजन सम्मान

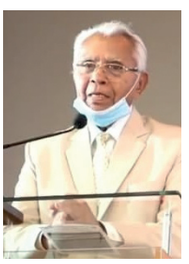
29 मार्च, 2022 को विश्व हिंदी सचिवालय तथा हिंदी लेखक संघ के सहयोग से भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस ने विश्व हिंदी सचिवालय के सभागार, फ़ेनिक्स में अमृत सृजन सम्मान का भव्य आयोजन किया।

समारोह के आरम्भ में भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस की द्वितीय सचिव (भाषा व संस्कृति), श्रीमती सुनीता पाहुजा ने उपस्थित महानुभावों तथा सभी



अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि *"आज हम उन सभी हिंदी साहित्यकारों को सम्मानित करने जा रहे हैं, जो 75 वर्षों से भी अधिक समय से हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं। उन साहित्यकारों ने सीमित संसाधनों के बावजूद हिंदी साहित्य की सेवा की और युवाओं को लेखन की ओर प्रेरित करने का अथक प्रयास किया।"*

हिंदी के सक्रिय लेखक, डॉ. उदय नारायण गंगू ने अपना वक्तव्य देते हुए भारत-मॉरीशस संबंधों को



सुदृढ़ करने में साहित्य की भूमिका को रखांकित किया। उन्होंने कहा *"भारतीय विद्वानों ने यहाँ आकर हमारे मन-मस्तिष्क का निर्माण किया तथा हमारी आत्मा को सुसज्जित किया और हमें साहित्य-सृजन की ओर उन्मुख किया। इस प्रकार मॉरीशस में बहुत साहित्यकार उभरे। साहित्यकारों ने जैसे मॉरीशस का गुणगान किया, वैसे ही भारतीय संस्कृति, धर्म और भाषा की महिमा का भी गान किया।"*



समारोह के मुख्य अतिथि श्री हनुमान दुबे गिरधारी रहे। साहित्य संवाद की समन्वयक, श्रीमती अंजु घरभरन ने मुख्य अतिथि का परिचय देते हुए कहा *"मॉरीशस में बच्चों एवं शिक्षकों के लिए तथा सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाओं के अधिकारियों के लिए श्री हनुमान दुबे गिरधारी गुरु के रूप में पूजनीय हैं।"*

कर्मठ हिंदी प्रचारक श्री हनुमान दुबे गिरधारी ने अपने संबोधन में कहा *"युवा पीढ़ी को हिंदी के भविष्य के लिए बहुत कुछ करना है। वर्षों से विभिन्न संस्थाएँ युवा पीढ़ी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती आ रही है, परंतु अभी बहुत कुछ करना शेष है।"* उन्होंने हिंदी के विकास में हिंदी प्रचारिणी सभा, आर्य सभा, आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा, हिंदू महासभा, रामायण सेंटर आदि के योगदान को उजागर किया।

हिंदी लेखक संघ की उपसचिव, श्रीमती कल्पना लालजी ने संघ की स्थापना और उद्देश्य का परिचय देते हुए कहा कि *"संघ के लेखकों ने अपना जीवन हिंदी की सेवा और भाषा के उत्थान में समर्पित किया है। यह हिंदी लेखकों की ही तपस्या का फल है कि आज भी इस देश में, इस समाज में और विशेषकर बच्चों में हिंदी भाषा जीवित है। मॉरीशस में गिरमिटिया मज़दूरों के आगमन से ही हिंदी का बीजारोपण हुआ।"*

भारतीय उच्चायुक्त, मॉरीशस, महामहिम श्रीमती के. नंदिनी सिंग्ला ने अपना संदेश देते हुए सम्मानित साहित्यकारों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि *"सब से ज़्यादा गौरव भारत को आप जैसे साहित्यकारों से मिलता है, जो हिंदी एवं भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार भारत से बाहर रहकर कर रहे हैं। भाषा और संस्कृति के प्रति आप सब के समर्पण के कारण ही युवा पीढ़ी में भी यह संस्कार संचारित हो रहा है।"* भारतीय उच्चायुक्त ने अमृत महोत्सव के संदर्भ



में भारतीय उच्चायोग की भावी योजनाओं पर भी प्रकाश डाला और हिंदी लेखक संघ को सम्मानित किया।



इस अवसर पर हिंदी के उत्थान में विशेष योगदान हेतु मॉरीशसीय हिंदी साहित्यकारों – डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ, डॉ. उदय नारायण गंगू, श्री खेमराज लीला, श्री प्रह्लाद रामशरण, श्री बलवंतसिंह नौबतसिंह, श्री विष्णुदत्त मधु, डॉ. बीरसेन जागासिंह, श्री रामदेव धुरंधर, डॉ. लालदेव अंचराज, श्री सत्यदेव प्रीतम, डॉ. सरिता बुद्धु और श्री सूर्यदेव सिबोरत को 'अमृत सृजन सम्मान' से अलंकृत किया गया।



विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने धन्यवाद करते हुए उपस्थित कर्मठ साहित्यकारों के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापित की। मंच-संचालन श्रीमती सुनीता पाहुजा ने किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

परिसंवाद/संगोष्ठी/गोष्ठी/सम्मेलन/कार्यशाला

परिसंवाद एवं काव्य उत्सव : "वर्तमान में हिंदी पत्रिकाओं की प्रासंगिकता"

18 फ़रवरी 2022 को कानोरिया पीजी महिला महाविद्यालय जयपुर द्वारा 'वर्तमान में हिंदी पत्रिकाओं की प्रासंगिकता' विषय पर परिसंवाद एवं काव्य-उत्सव का आयोजन किया गया। इस परिसंवाद एवं काव्य-उत्सव के मुख्य अतिथि डॉ. आशीष कंधवे रहे।

उन्होंने पत्रिका की सांस्कृतिक जागरूकता, सामाजिक दायित्व, भाषाई चेतना तथा साहित्यिक अवदान पर अपनी बात रखी। उन्होंने बताया कि लघु पत्रिकाओं को समाज के सांस्कृतिक एवं साहित्यिक चेतना के बृहद सेतु के रूप में देखना चाहिए।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित सुश्री कोमल ने अपने उद्बोधन के माध्यम से पत्रिकाओं के सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, भाषाई एवं सामरिक महत्त्व पर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि समाज को देखने के दृष्टिकोण से ही किसी भी पत्र-पत्रिका का अस्तित्व और चैतन्यता परिभाषित होती है।



सुश्री कोमल, डॉ. जयश्री शर्मा, डॉ. रत्ना शर्मा, डॉ. शशि सक्सेना, संगीता गुप्ता, कविता मुखर, विट्ठल पारीक, भूपेंद्र भरतपुरी, नवल किशोर दुबे, कविता माथुर, कल्पना गोयल, विनय कुमार आदि ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

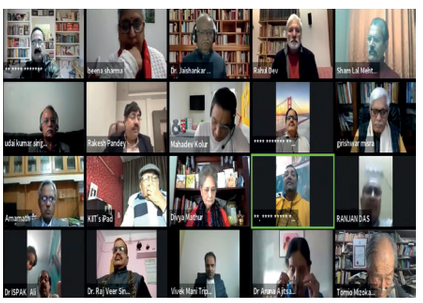
कार्यक्रम का संचालन कानोरिया पीजी महाविद्यालय की असिस्टेंट प्रोफ़ेसर डॉ. शीताभ शर्मा ने किया। सभागार में जयपुर के कई गणमान्य लोगों के साथ-साथ कनोरिया पीजी महिला महाविद्यालय की छात्राओं की उपस्थिति रही।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पृष्ठ

'हिंदी और उसकी बोलियों का अंतर्संबंध' विषयक वेब संगोष्ठी

30 जनवरी, 2022 को विश्व हिंदी सचिवालय, केंद्रीय हिंदी संस्थान तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा भाषा-विमर्श की कड़ी में 'हिंदी और उसकी बोलियों का अंतर्संबंध' विषय पर वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की विषय-प्रवर्तना करते हुए केंद्रीय हिंदी संस्थान की निदेशिका प्रो. बीना शर्मा ने बोलियों के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कहा कि भाषा की समृद्धि उप-भाषाओं के विकास से जुड़ी है और भाषा का सम्यक विकास तभी संभव है जब बोलियाँ भी फलेंगी-फूलेंगी।

संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के पूर्व कुलपति, डॉ. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि बहुभाषिकता भारत की पहचान रही है तथा हर बोली में भाषा बनने के तत्व विद्यमान हैं। उन्होंने वर्तमान सरकार द्वारा तैयार की गई नई शिक्षा नीति में मातृभाषा के विकास की योजनाओं पर आशा व्यक्त की।



मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित वरिष्ठ पत्रकार और भाषाकर्मी, श्री राहुल देव ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बोलियों को बोली न कहकर स्वभाषा कहा जाना ज़्यादा तर्कसंगत है। उन्होंने हिंदी के हिंदी परिवार की 57 सहभाषाओं से ऊर्जा पाकर आगे बढ़ने की बात की। श्री राहुल देव ने कहा कि *"अब समय आ गया है कि संविधान की आठवीं अनुसूची की प्रासंगिकता को लेकर गंभीर विचार-विमर्श किया जाए।"*

विशिष्ट वक्ता के तौर पर अपनी बात रखते हुए अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् के मानद निदेशक, श्री नारायण कुमार ने बोलियों की महत्ता को प्रमुखता से रेखांकित करते हुए कहा कि भाषा के लिए केवल रोज़गार ही आवश्यक तत्व नहीं है, बल्कि भाषा के लिए सबसे ज़रूरी तत्व संस्कार है। उन्होंने बोलियों के विकास से भाषा के विकास का संबंध बताया।

मुख्य वक्ता के रूप में कोलकाता विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष, श्री अमरनाथ ने कहा कि भाषा और बोली में कोई तात्विक अंतर नहीं है तथा आज खड़ी बोली भाषा बन गई है। इस क्रम में महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के भोजपुरी एवं लोक संस्कृति विभाग के अध्यक्ष, डॉ. अरविन्द बिसेसर ने कहा कि मॉरीशस में भोजपुरी के माध्यम से हिंदी आगे बढ़ रही है तथा हिंदी की भूमिका एक बड़ी बहन की है। इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा कि *"हिंदी और भोजपुरी को बढ़ावा देने के लिए मॉरीशस में दोनों भाषाओं में रेडियो द्वारा समाचारों का प्रसारण होता है।"*

प्रवासी संसार के संपादक, श्री राकेश पाण्डेय ने अपने विचार व्यक्त करते हुए भाषा और बोली के बीच के संबंध की तुलना भवन और उसकी बुनियाद से की। उन्होंने विभिन्न देशों में हिंदी की भाषायी पहचान को उजागर करते हुए कहा कि फ़िजी में 'फ़िजीबात' है, सूरीनाम में 'सूरीनामी हिंदी' है। इन देशों में मानक हिंदी प्रचलन में नहीं हैं, लेकिन यहाँ बोलियों के माध्यम से हिंदी का विकास हो रहा है।

कार्यक्रम का समाहार करते हुए केंद्रीय हिंदी शिक्षण मण्डल के उपाध्यक्ष, श्री अनिल शर्मा 'जोशी' ने कहा कि भाषा और बोलियों के अंतर्संबंध को सकारात्मक दिशा में ले जाने के लिए पारस्परिक संवाद, समन्वय और सद्भावना बहुत ज़रूरी है। उनके अनुसार *"नई शिक्षा नीति के ज़रिए सरकार ने एक अवसर दिया है, जिससे हिंदी को शक्ति मिलेगी तथा लोक भाषा को भी मज़बूती मिलेगी। ऐसे में यह ज़रूरी है कि पारस्परिक समन्वय और संवाद को हम महत्त्व दें, ताकि भाषा, संस्कृति और भारतीयता को मज़बूती मिले।"*

कार्यक्रम का संचालन हंसराज कॉलिज के असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, विजय मिश्र तथा कार्यक्रम का संयोजन जवाहर कर्नावट तथा संध्या सिंह ने किया। अंत में, भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस की द्वितीय सचिव (हिंदी एवं संस्कृति) श्रीमती सुनिता पाहुजा ने प्रतिभागियों को धन्यवाद किया।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का फ़ेसबुक पृष्ठ

वातायन-वैश्विक संगोष्ठी– स्मृति एवं संवाद श्रृंखला : रघुवीर सहाय

12 फ़रवरी, 2022 को वातायन-यूके द्वारा आयोजित संगोष्ठी सुप्रसिद्ध लेखक, पत्रकार और कथाकार रघुवीर सहाय की कविताओं पर केन्द्रित थी। कार्यक्रम के आरंभ में श्री आशीष मिश्र ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. रेखा सेठी ने की। भारत के वरिष्ठ साहित्यकार एवं आलोचक श्री अरविन्द त्रिपाठी और दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राध्यापक तथा युवा आलोचक, डॉ. पंकज कुमार बोस ने रघुवीर सहाय की कविताओं पर सूचनापरक वक्तव्य प्रस्तुत किए।

श्री अरविन्द त्रिपाठी ने अपने वक्तव्य में कहा कि *"रघुवीर सहाय की कविता भोग विलास की कविता नहीं है, अपितु समाज और सत्ता पर हस्तक्षेप की कविता है। उनकी कविताओं में स्त्री-जीवन की मुक्ति के प्रश्नों को जितनी हमदर्दी और आत्मीयता से जगह दी गयी है, वह कमाल की है।"* उन्होंने कहा कि जैसे सर्वेश्वरदयाल और श्रीकांत शब्दों के कवि हैं, उसी तरह रघुवीर सहाय वाक्यों के कवि हैं। श्री पंकज बोस के अनुसार सहाय जी की कविताओं में जो सटीकता है, वह सपाट बयानी

की है। आज की पीढ़ी शायद उसी की नकल कर रही है।

श्रोताओं में विश्व भर के लेखक और विचारक सम्मिलित हुए, जिनमें प्रो. टोमियो मिज़ोकामी, प्रो. ल्युदमीला खोखलोवा, श्री अनूप भार्गव, डॉ. मनोज मोक्षेन्द्र, डॉ. जयशंकर यादव, डॉ. शैलजा सक्सेना, डॉ. वरुण कुमार, श्री विवेक मणि त्रिपाठी, प्रवीर भारती, गाथा सक्सेना, श्री जय वर्मा, श्री अरुण सब्बरवाल, श्री महादेव कोलूर, श्री मनोज तिवारी इत्यादि थे। धन्यवाद-ज्ञापन श्री आशीष मिश्र तथा कार्यक्रम का संचालन डॉ. रेखा सेठी ने किया।

साभार : वी विट्नस न्यूज़.कॉम

'भारत के पड़ोसी देशों में हिंदी' विषयक संगोष्ठी



13 फ़रवरी, 2022 को वैश्विक हिंदी परिवार, केंद्रीय हिंदी संस्थान, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् तथा विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में 'भारत के पड़ोसी देशों में हिंदी' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। केंद्रीय हिंदी संस्थान हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक श्री गंगाधर वानोडे ने अतिथियों का स्वागत किया। केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष श्री अनिल शर्मा जोशी ने संगोष्ठी का समाहार करते हुए कहा कि भारत के पड़ोसी देश नेपाल, भूटान, श्रीलंका, म्यांमार, बांग्लादेश, अफ़गानिस्तान में हिंदी भाषा का शिक्षण और प्रचलन ना केवल हमारे संबंधों को मज़बूत बनाता है, बल्कि आत्मीयता और घनिष्ठता भी प्रदान करता है। इन देशों में भाषा और संस्कृति के लिए ऐसी नीति तैयार करनी चाहिए, जिससे भाषा का संवर्द्धन हो और राजनयिक संबंध भी अच्छे हों।

संगोष्ठी की विषय-प्रवर्तना करते हुए केंद्रीय हिंदी संस्थान की निदेशिका, प्रो. बीना शर्मा ने कहा कि भाषा एक व्यवहार है, जिसका मूल लक्ष्य संप्रेषण हैं। श्रीलंका में सिंघली भाषा में जो मुहावरे हैं, वे हमारे हिंदी और संस्कृत के मुहावरों से मिलते-जुलते हैं। पड़ोसी देशों से अक्सर यह शिकायत आती है कि वहाँ जो बोली जाती है, वह पढ़ाई नहीं जाती। जो पढ़ाई जाती है, वह बोली नहीं जाती।

अफ़गानिस्तान के हिंदी विद्यार्थी मोहम्मद फ़हीम ने बताया कि अफ़गानिस्तान में वर्ष 2006 में हिंदी पठन-पाठन का आरंभ हुआ। अब वहाँ 40 छात्र हर साल हिंदी पढ़ रहे हैं। अब तक 150 छात्र स्नातक स्तर पर डिप्लोमा प्राप्त कर चुके हैं। केंद्रीय हिंदी संस्थान भाषा के लिए काम कर रहा है।

सुदीमा इंटरनेशनल, म्यांमार के शाखा प्रबंधक आशा कुमारी गुप्ता ने म्यांमार में हिंदी के लिए पं. हरीनंदन शर्मा के योगदान की चर्चा करते हुए बताया कि वहाँ 1909 से ही हिंदी का प्रचलन है। बाद के दिनों में डॉ. ओमप्रकाश और सत्यनारायण गोयनका ने हिंदी के प्रचार हेतु महत्त्वपूर्ण काम किए। वर्तमान में चिंतामणि वर्मा हिंदी-सेवा कर रहे हैं। आज वहाँ 114 छात्र विद्यालय में रहकर हिंदी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

केंद्रीय हिंदी संस्थान की पूर्व छात्रा शुभाषिनी ने बताया कि श्रीलंका सरकार के 17 विश्वविद्यालयों में से 12 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। हिंदी में स्नातकोत्तर-स्तर की, एमफ़िल तथा पी.एचडी की भी पढ़ाई होती है। इंजीनियरिंग के छात्र भी हिंदी सीखते हैं।

भूटान से हिंदी अध्यापिका अर्चना ठाकुर ने कहा कि भूटान के लागों के मन में हिंदी के लिए बड़ा सम्मान है। हिंदी के कारण ही हिंदी शिक्षकों को भी वहाँ प्रतिष्ठा मिलती है। संगमनीति, बांग्लादेश के निदेशक श्री संगम लाल जी ने कहा कि बांग्लादेश की सरकार ने हिंदी पर पाबंदी लगा रखी है, लेकिन वहाँ की व्यापारिक और बोलचाल की भाषा हिंदी ही है।

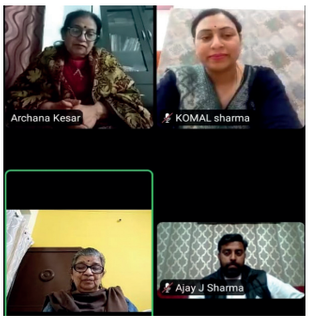
त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमांडू नेपाल की हिंदी विभागाध्यक्ष संगीता वर्मा ने कहा कि साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से नेपाल में हिंदी की जड़ें बहुत मज़बूत हैं, किंतु राजनीतिक विरोध के कारण वर्तमान में वहाँ की शैक्षणिक स्थिति कमज़ोर है। उन्होंने कहा कि उच्च स्तर पर हिंदी भाषा की पढ़ाई होती है, लेकिन स्कूल के स्तर पर बंद है। भारत सरकार से उन्होंने सहयोग की अपील की कि जिस तरह नेपाल सरकार भारत में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति देती है, उसी तरह भारत सरकार को भी नेपाल जाकर पढ़ने वालों को छात्रवृत्ति देने पर विचार करना चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् के मानद निदेशक श्री नारायण कुमार ने कहा कि हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए सभी हिंदी सेवियों को तन्मयता से काम करना चाहिए। पड़ोसी देशों में पुराने समय में काम करने वाले हिंदी साधकों को स्मरण करते हुए उन्होंने उनके साहित्य को आमजन तक पहुँचाने पर बल दिया।

वरिष्ठ पत्रकार एवं प्रसिद्ध भाषाकर्मी श्री राहुल देव ने पड़ोसी देशों में हिंदी के प्रति भाव, अनुराग, सेवा, जुनून के साथ-साथ टीस के अनुभव को रेखांकित किया। श्रीलंका में हिंदी महफ़ूज होने और भूटान में हिंदी से प्रतिष्ठा प्राप्त होने को उन्होंने गौरव की श्रेणी में रखते हुए कहा कि आखिर भारत में हिंदी के प्रति ऐसा भाव कब आएगा। कार्यक्रम का संयोजन जवाहर कनार्वट, संध्या सिंह, जयशंकर यादव और राजीव रावत ने किया। धन्यवाद-ज्ञापन श्री पद्मेश गुप्त ने किया तथा कार्यक्रम का संचालन श्री सत्येन्द्र दहिया ने किया।

साभार : तेलंगाना समाचार.ऑनलाइन

हिंदी काव्य-गोष्ठी का आयोजन



08 मार्च, 2022 को जम्मू कश्मीर हिंदी अकादमी, जम्मू द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी काव्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता प्रो. अर्चना केसर ने की। कार्यक्रम के आरंभ में अकादमी के संस्थापक श्री यशपाल निर्मल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए सभी को महिला दिवस की शुभकामनाएँ दीं। काव्य-गोष्ठी में डॉ. नीलिमा तिग्गा 'नीलांबरी', डॉ. नीना छिब्बर, सोनिका शर्मा, सुनीता कुमारी, सरोज बाला और कोमल शर्मा ने काव्य-पाठ किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. अर्चना केसर ने प्रतिभागियों की कविताओं पर विस्तृत चर्चा करते हुए सभी को बधाई दी और भविष्य में भी इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करते रहने के लिए अकादमी को प्रेरित किया। धन्यवाद-ज्ञापन अकादमी के प्रचार सचिव, श्री रोशन बराल तथा मंच-संचालन जम्मू कश्मीर हिंदी अकादमी की महासचिव, सरोज वाला ने किया।

साभार : श्री यशपाल शर्मा

साहित्य संवाद और कवि गोष्ठी



12 फ़रवरी, 2022 को हिमालय साहित्य संस्कृति और पर्यावरण मंच द्वारा शिमला गेयटी सभागार में साहित्य संवाद और कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। हिमालय मंच के अध्यक्ष श्री एच. आर. हरनोट ने सभी उपस्थित रचनाकारों का स्वागत किया। साहित्य गोष्ठी की अध्यक्षता प्रसिद्ध रचनाकार डॉ. उषा बंदे ने की, जिनके साथ डॉ. सत्यनारायण स्नेही और जगदीश बाली ने मंच साझा किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में तीनों रचनाकारों ने छात्रों की रचनात्मक रुचि और भागीदारी की प्रशंसा की और मंच के आयोजनों में लगातार भाग लेने के लिए भी प्रेरित किया।

इस अवसर पर 25 से ज़्यादा छात्र-छात्राओं ने अपनी रचनाएँ पढ़ीं। समारोह में श्री नरेश दयोग, श्री जगदीश बाली, श्री जगदीश कश्यप, श्री कुलदीप गर्ग तरुण, श्री सुरेश चंद शुक्ल आदि कई युवा और वरिष्ठ लेखक उपस्थित थे। मंच-संचालन मोनिका छट्टू ने किया।

साभार : श्री एस आर हरनोट का फ़ेसबुक पृष्ठ

साहित्य संवाद की गोष्ठियाँ

21 जनवरी, 2022 को भारतीय उच्चायोग, साहित्य संवाद समिति, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र एवं विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा साहित्य संवाद गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें सचिवालय के पूर्व महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र, महात्मा गांधी संस्थान से हिंदी पीठ डॉ. वेद रमन पाण्डेय, साहित्यकार डॉ. जयप्रकाश कर्दम और राष्ट्रभाषा विभाग दिल्ली से श्रीमती भावना सक्सेना ने अपने-अपने क्षेत्रों से जुड़े हिंदी कार्यों पर सारगर्भित चर्चा की। फ़ेसबुक लाइव होने के कारण इसमें पाँच सौ से भी अधिक श्रोताओं की भागीदारी रही।

18 फ़रवरी, 2022 को आयोजित साहित्य संवाद गोष्ठी में श्रीमती कल्पना लालजी कृत कहानी-संग्रह 'अपराजिता' की कहानियों पर श्रीमती विजेता बाघी जवाहिर, डॉ. दीया लक्ष्मी बंधन, श्री राजवीर अवतार एवं श्री सर्वेश कुंजा ने अपने विचार व्यक्त किए।

27 मार्च, 2022 को बृंदावन मल्टी पर्पस एजुकेशनल एसोसिएशन में आज़ादी के 75 वर्ष पर मनाये जा रहे 'अमृत महोत्सव' के अंतर्गत मॉरीशस के राष्ट्रीय दिवस के उपलक्ष्य में 'हिंदी उपवन के खिलते सुमन' विषय पर साहित्य-संवाद का आयोजन किया गया। मॉरीशस के राष्ट्रीय दिवस को छात्रों के साथ मनाने के लिए इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय गीत, नृत्य एवं रोचक संवाद प्रस्तुत किए गए।

साहित्य-संवाद की समन्वयक, श्रीमती अंजू घरभरन की रिपोर्ट

अंतरराष्ट्रीय तरंग गोष्ठी

10 जनवरी, 2022 को नई दिल्ली में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर अध्ययन एवं अनुसंधान पीठ द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव को समर्पित 'हिंदी का वैश्विक विस्तार और मूलभूत चुनौतियाँ' विषय पर अंतरराष्ट्रीय तरंग गोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस के अध्यक्ष, श्री यन्तुदेव बुधु ने की। संयोजिका प्रो. माला मिश्र ने विश्व हिंदी दिवस की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 10 जनवरी 1975 को पहली बार विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन हिंदी प्रचारिणी सभा, वर्धा की पहल पर नागपुर में हुआ था। वक्ता, डॉ. राकेश दुबे ने हिंदी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और उसकी महत्ता पर बात की। साथ ही, उन्होंने हिंदी के पल्लवन के लिए कोरोना काल में किए गए प्रयासों से अवगत कराया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में, श्री यन्तुदेव बुधु ने 1926 से मॉरीशस में हिंदी को बढ़ावा देने के प्रयासों और जनसहयोग के प्रति संतुष्टि प्रकट की। उन्होंने कहा कि हिंदी जनमन की भाषा है, जो संस्कृति के साथ घुली-मिली हुई है। इसके अतिरिक्त उन्होंने सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी के व्यापक प्रचार को सार्थक माना। उन्होंने हिंदी के विकास में गिरमिटिया मज़दूरों और रामचरितमानस की विशिष्ट भूमिका को रेखांकित किया। आभार-ज्ञापन डॉ. माला मिश्र ने किया।

श्री यन्तुदेव बुधु के फ़ेसबुक पृष्ठ से साभार

राष्ट्रीय कवि सम्मेलन

24 फ़रवरी, 2022 को अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल के सभागार में आयोजित राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति, डॉ. खेमसिंह डेहरिया ने की। कवि सम्मेलन में देश के कई प्रसिद्ध कवियों जैसे इंदौर से पधारे राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध कवि श्री राकेश डांगी, श्रीराम मनावत, डॉ. आशीष कंधवे, युवा रचनाकारों में कवयित्री सुश्री कोमल और राहुल राठौर के अलावा मुकेश शांडिल्य एवं भोपाल की सुश्री सुनीता ने अपनी कविताओं का पाठ किया। कवि सम्मेलन का संचालन श्रीराम मनावत ने किया।

डॉ. आशीष कंधवे के फ़ेसबुक पृष्ठ से साभार

कार्यशाला एवं कहानी-पाठ



13 मार्च, 2022 को शिमला के गेयटी सभागार में हिमालय साहित्य, संस्कृति एवं पर्यावरण मंच द्वारा 'कहानी कैसे पढ़ें और समझें' विषयक कार्यशाला एवं कहानी-पाठ का आयोजन किया गया। कार्यशाला के पहले सत्र की अध्यक्षता प्रो. मीनाक्षी एफ़. पॉल ने की तथा दूसरे सत्र की अध्यक्षता युवा रचनाकार श्री अभिषेक तिवारी ने की। कार्यक्रम के आरंभ में दिवंगत लेखक संपादक जिया सिद्धिकी को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई।

दूसरे सत्र में छः कहानियों का पाठ किया गया। अतिथि कहानीकार श्री सुरेश शांडिल्य ने 'बीज' कहानी, श्री गुप्तेश्वर नाथ उपाध्याय ने 'अकेला', श्री हरदेव सिंह धीमान ने 'संयोग', उमा ठाकुर नधैक ने 'टूटन', श्री सुरेश चंद शुक्ला ने 'सतिया घराटी' और श्री रूपेश कुमार विचित्र ने 'भुने हुए तीतर' कहानियों का पाठ किया, जिसपर डॉ. विद्या निधि छाबड़ा और प्रो. मीनाक्षी एफ़ पॉल ने विस्तार से चर्चा की। श्री अभिषेक तिवारी ने भी सभी कहानियों पर अपनी बात रखी। कार्यक्रम में अनेक छात्र-छात्राओं और साहित्य प्रेमियों ने भाग लिया। मंच-संचालन दीप्ति सारस्वत ने किया।

साभार : श्री एस आर हरनोट का फ़ेसबुक पृष्ठ

लोकार्पण

श्री कृष्ण कुमार वर्मा की कृति 'उड़ने वाला घोड़ा' पुस्तक का लोकार्पण

02 जनवरी, 2022 को ग़ाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश स्थित होटल राजपथ रेज़ीडेंसी के भव्य सभागार में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संस्था 'उद्भव' के तत्वावधान में लेखक श्री कृष्ण कुमार वर्मा की कृति 'उड़ने वाला घोड़ा' का लोकार्पण किया गया। समारोह की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध हिंदी सेवी व प्रवासी साहित्य विशेषज्ञ, डॉ. राकेश पांडेय ने की।

'उद्भव' संस्था के महासचिव एवं वरिष्ठ कवि डॉ. विवेक गौतम की दक्षता ना सिर्फ़ सृजनात्मक लेखन में है, बल्कि सृजनकर्मियों के लिए कार्यक्रमों के आयोजन में भी उनके समकक्ष कोई और दूसरा दिखाई नहीं देता।



मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफ़ेसर उमापति दीक्षित ने बाल साहित्य के महत्त्व से सब का परिचय कराया एवं उसकी महत्ता पर विस्तार से चर्चा की।

विशिष्ट अतिथि डॉ. विवेक गौतम ने पुस्तक में संकलित 19 कहानियों एवं 76 पृष्ठों में निबद्ध रचनाओं पर आद्योपांत अपना अभिमत प्रस्तुत किया तथा सभा को यह बताने का भी प्रयास किया कि बाल साहित्य के माध्यम से ही नई पीढ़ी में अथवा युवा पीढ़ी में साहित्यिक-सांस्कृतिक विकास का बीजारोपण होता है।

विशिष्ट वक्तव्य के क्रम में श्री एस. के. शर्मा उपनिदेशक, शिक्षा, नई दिल्ली ने नई पीढ़ी के बच्चों में पुस्तक पढ़ने की अभिरुचि का समाप्तप्राय होने के तथ्य को रेखांकित करने के साथ ही चिंता व्यक्त करते हुए सभा को आगाह किया कि पुस्तक संस्कृति को बचाने के लिए युवाओं में और तरुणों में पुस्तक पढ़ने के प्रति अभिरुचि बनी रहनी चाहिए। कार्यक्रम के समापन में सभागार में उपस्थित कवियों ने कविता-पाठ किया। समारोह का संचालन उद्भव के महासचिव, डॉ. विवेक गौतम ने किया।

साभार : डॉ. विवेक गौतम का फ़ेसबुक पृष्ठ

पुस्तक लोकार्पण एवं कवि सम्मेलन



26 मार्च, 2022 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा महादेवी वर्मा जयंती के अवसर पर पुस्तक लोकार्पण समारोह एवं कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। अतिथियों का स्वागत सम्मेलन के प्रधानमंत्री डॉ. शिववंश पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर पूर्व हिंदी प्रगति समिति के अध्यक्ष और बिहार गीत के यशस्वी कवि श्री सत्यनारायण ने ऋता शुक्ल 'मधु' के तीन काव्य-संग्रहों 'वर्ण सितारे', 'धूप के गुलमोहर' और 'एक मुट्ठी धूप'

तथा किरण सिंह, श्रीमती मधु और कुमार गौरव अजीतेंदु के साझा संकलन 'बिहार छंद-काव्य रागिनी' का लोकार्पण किया। समारोह का उद्घाटन करते हुए, बिहार की उपमुख्यमंत्री रेणु देवी ने कहा कि छायावाद-काल की प्रमुख कवयित्री महादेवी वर्मा, जिन्हें 'आधुनिक मीरा' भी कहा जाता है करुणा और स्त्री-चेतना की महनीया कवयित्री हैं। आज उनकी जयंती के अवसर पर बिहार की दो चर्चित कवयित्रियों की पुस्तकों का लोकार्पण हुआ है, यह नारी-सशक्तिकरण की दिशा में हमारे बढ़ते कदम का सुंदर उदाहरण है।

समारोह के अध्यक्ष, डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि अमर कवयित्री और हिंदी के छायावाद-काल की प्रमुख स्तम्भ महादेवी वर्मा ने हिंदी के विशाल काव्य-सागर में गीतों की अनेक निर्झरनियाँ गिराईं, जिनका उद्गम उनका करुणा से भरा विशाल हृदय ही था। महादेवी की रचनाओं की वही ध्वनि बिहार की चर्चित कवयित्री किरण सिंह और ऋता शेखर 'मधु' की काव्य-रचनाओं में भी सुनाई देती है। विद्वान साहित्यकार भगवती प्रसाद द्विवेदी ने कहा कि कवयित्री किरण सिंह, ऋता शेखर 'मधु' तथा युवा कवि अजीतेंदु ने बिहार की सांस्कृतिक विरासत और उसकी छांदस काव्य की रागिनियों को मधुर स्वर दिया है, जिनमें प्रकृति के अनूठे चित्र भी मिलते हैं। पूर्व सांसद और वरिष्ठ पत्रकार डॉ. रवींद्र किशोर सिन्हा, सम्मेलन के उपाध्यक्ष नृपेंद्र नाथ गुप्त, सुप्रसिद्ध लेखक जियालाल आर्य, मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश', डॉ. मधु वर्मा, डॉ. कल्याणी कुसुम सिंह तथा दूरदर्शन एवं बिहार के कार्यक्रम प्रमुख डॉ. राजकुमार 'नाहर' ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर आयोजित कवि-सम्मेलन का आरंभ वरिष्ठ कवयित्री डॉ. आराधना प्रसाद ने वाणी-वंदना से किया। वरिष्ठ कवि बच्चा ठाकुर, डॉ. ब्रह्मानन्द पाण्डेय, डॉ. मेहता नगेंद्र सिंह, आरपी घायल, मधुरेश शरण, शुभचंद्र सिन्हा, डॉ. अर्चना त्रिपाठी, मधुरानी लाल, डॉ. विनय कुमार विष्णुपुरी, डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव, डॉ. सुलक्ष्मी कुमारी, डॉ. सुषमा कुमारी, डॉ. सीमा यादव, डॉ. मनोज गोवर्द्धनपुरी, पूनम सिन्हा श्रेयसी, जय प्रकाश पुजारी, डॉ. सुधा सिन्हा, डॉ. शालिनी पांडेय, मोईन गिरिडिहवी, शुभ चंद्र सिन्हा, माधुरी भट्ट, डॉ. रेखा भारती, लता प्रासर, सिद्धेश्वर प्रसाद, नूतन सिन्हा, अश्मजा प्रियदर्शिनी, बिंदेश्वर प्रसाद गुप्ता, प्रेमलता सिंह, श्वेता मिनी, प्रभात धवन, चंदा मिश्र, अर्जुन प्रसाद सिंह, पंकज प्रियम, डॉ. कुंदन लोहानी, अर्चना भारती और बाँके बिहारी साव ने भी अपनी रचनाओं का पाठ किया। धन्यवाद-ज्ञापन श्री कृष्ण रंजन सिंह ने तथा मंच-संचालन श्री सुनील कुमार दूबे ने किया।

साभार : डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट

'प्रवासी जगत' के बालेश्वर अग्रवाल विशेषांक एवं प्रवासी लेखकों की पुस्तकों का लोकार्पण

03 मार्च, 2022 को केंद्रीय हिंदी संस्थान और अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में केंद्रीय हिंदी संस्थान की त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'प्रवासी जगत' के बालेश्वर अग्रवाल विशेषांक एवं यू.के., कनाडा, न्यूज़ीलैंड तथा नेपाल के प्रवासी लेखकों - सुश्री दिव्या माथुर, डॉ. पद्मेश गुप्त, डॉ. शैलजा सक्सेना, श्री रोहित कुमार 'हैप्पी' तथा वीणा सिन्हा की पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। अतिथियों का स्वागत करते हुए परिषद् के महासचिव, श्याम परांडे ने कहा कि बालेश्वर जी ने डायसपोरा और भाषाओं को लेकर महत्त्वपूर्ण कार्य किए। उन्होंने कहा कि केंद्रीय हिंदी संस्थान विदेशों में हिंदी को बढ़ावा देने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है।



कार्यक्रम की मुख्य अतिथि विदेश राज्य एवं संस्कृति मंत्री माननीया श्रीमती मीनाक्षी ने अपने संदेश में कहा कि बालेश्वर जी भारतीय संस्कृति और भाषाओं के उत्थान के लिए आजीवन काम करते रहे हैं। यही नहीं, उन्होंने गिरमिटिया मज़दूरों की चिंता करते हुए उनके उत्थान के लिए भी प्रशंसनीय कार्य किया है। पूर्व राजदूत वीरेंद्र गुप्ता ने बताया कि बालेश्वर जी कहा करते थे कि अगर भारत को ज़िंदा रखना है, तो भारतीय संस्कृति और भारतीय भाषाओं को ज़िंदा रखना होगा। यही वजह है कि वह अपने हर काम में हिंदी और भारतीय संस्कृति को बड़ा महत्त्व देते थे।

बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार और केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष, श्री अनिल जोशी ने कहा कि हिंदी शिक्षण के प्रचार-प्रसार के लिए प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी मोटूरी सत्यनारायण ने केंद्रीय हिंदी संस्थान की स्थापना की थी। लेकिन अब यह संस्था विदेशों में भी हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास कर रही है। विदेशों में हिंदी प्रकाशन की सुविधा आसान नहीं है। इसे ध्यान में रखते हुए केंद्रीय हिंदी संस्थान ने इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाते हुए गत वर्ष पुस्तक प्रकाशन सहयोग योजना प्रारंभ की। आज का यह समारोह उसी का परिणाम है।

इस अवसर पर पूर्व वरिष्ठ राजनयिक, परिषद् के निदेशक और भाषा कर्मी श्री नारायण कुमार जी ने प्रवासी भारतीयों के लिए किए गए बालेश्वर जी के कार्यों को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि बालेश्वर जी ने भारत को ही नहीं, बल्कि भारतवंशियों को भी अपना कार्यक्षेत्र बनाया। यह उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। इस अवसर पर वरिष्ठ राजनयिक और भाषाविद् श्री नारायण कुमार, श्री गोपाल अरोड़ा, केंद्रीय हिंदी संस्थान की निदेशिका, डॉ. बीना शर्मा सहित देश-विदेश से हिंदी प्रेमी, विद्वान और साहित्यकार आभासी मंच ज़ूम से जुड़े रहे।

साभार : तेलंगाना समाचार.ऑनलाइन

'एक समंदर गहरा भीतर' का लोकार्पण

03 मार्च, 2022 को डॉ. वेद मित्र शुक्ल कृत 'एक समंदर गहरा भीतर' सॉनेट-संग्रह का लोकार्पण मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्रख्यात आलोचक एवं कवि डॉ. ओम निश्चल द्वारा किया गया। इस अवसर पर सॉनेट-संग्रह पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। लेखक श्री शुक्ल द्वारा अपने संग्रह से 'माँ, धरती, बादल-सा' और 'मजबूरी में मज़दूरी, पर स्वाभिमान से' शीर्षक से दो प्रतिनिधि सॉनेटों का काव्य-पाठ हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे



डॉ. रामदरश मिश्र ने पुस्तक के लेखक को सॉनेट छंद के माध्यम से जीवन और कविता दोनों को सादगी के साथ साधने के लिए बधाई देते हुए कहा कि विधा कोई भी हो, शैली कोई भी हो, उसमें लेखक ही अपने ईमानदार अनुभवों, भावों और दृष्टि के साथ व्याप्त रहता है। लोकप्रिय कवि नरेश शांडिल्य ने वेद मित्र के सॉनेटों को भारतीय मूल्य, परिवेश, परंपरा आदि से ओतप्रोत बताया। व्यंग्यकार हरिशंकर राढ़ी ने इस हिंदी सॉनेट-संग्रह को विदेशी ज़मीन पर सफलतापूर्वक रोपा गया देशी पौधा बताते हुए कृति को हिंदी कविता का ही विस्तार माना। डॉ. जसवीर त्यागी ने संग्रह से रचनाएँ पढ़ते हुए वैविध्यपूर्ण कथ्यों को पुस्तक की पठनीयता और रोचकता को बढ़ाने वाला महत्त्वपूर्ण कारक बताया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. स्मिता मिश्र ने किया।

साभार : साहित्य कुंज.नेट

कमला प्रसाद मिश्र काव्य संचयन का लोकार्पण एवं संगोष्ठी

27 फ़रवरी, 2022 को वैश्विक हिंदी परिवार एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान, भारत का उच्चायोग, स्वामी विवेकानन्द सांस्कृतिक केंद्र फ़िजी, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् तथा विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में कमला प्रसाद मिश्र काव्य संचयन का लोकार्पण एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें कमला प्रसाद मिश्र के साहित्यिक अवदान पर चर्चा की गई। केंद्रीय हिंदी संस्थान मैसूर के क्षेत्रीय निदेशक, श्री परमान सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए फ़िजी में भारत के उच्चायुक्त पीएस कार्तिकेयन ने कवि कमला प्रसाद मिश्र के साहित्यिक योगदान

की प्रशंसा की। उन्होंने बताया कि फ़िजी दुनियाभर में एकमात्र ऐसा देश है, जहाँ संविधान में हिंदी को स्थान प्राप्त है। उन्होंने कहा कि भारत की आज़ादी के अमृत महोत्सव के दौरान स्वभाषा के विकास के लिए ढेर सारे कार्यक्रम जगह-जगह आयोजित किए जा रहे हैं। फ़िजी स्थित भारतीय उच्चायोग हर संभव सहयोग के लिए तत्पर है। फ़िजी में अगले विश्व हिंदी सम्मेलन की तैयारी चल रही है। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से हिंदी की नींव और अधिक मज़बूत होगी।

संगोष्ठी के प्रारंभ में केंद्रीय हिंदी शिक्षण मण्डल के उपाध्यक्ष, श्री अनिल शर्मा जोशी ने कहा कि कमला प्रसाद मिश्र फ़िजी के श्रेष्ठतम कवियों में गिने जाते हैं। उन्हें सरस्वती का वरदान प्राप्त था। श्री मिश्र ने अपनी लंबी साहित्यिक यात्रा में कविता, गद्य, व्यंग्य के साथ-साथ संपादन जैसी विधा को भी समृद्ध किया। प्रख्यात लेखक और भाषाविद् डॉ. विमलेशकांति वर्मा ने कहा कि मिश्र जी न सिर्फ़ कवि थे, बल्कि वे एक सधे हुए गद्यकार भी थे। उनकी कविताओं पर काम हो रहा है, इसी तरह उनके गद्य को भी दुनिया के सामने लाया जाना चाहिए।



के. के. बिरला फ़ाउंडेशन के निदेशक तथा कमला प्रसाद मिश्र काव्य-संचयन के संपादक डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण ने कहा कि कमला प्रसाद मिश्र हिंदी साहित्य एवं प्रवासी साहित्य का एक चमकता हुआ तेज पुंज है। उन्होंने प्रसिद्ध साहित्यकार विजय स्नातक द्वारा श्री मिश्र के बारे में की गई टिप्पणी -'अगर कमला प्रसाद फ़िजी ना गए होते, तो भारत के बड़े कवि होते' को उधृत किया तथा कहा कि मिश्र जी के साहित्य पर अभी और काम करने की ज़रूरत है। अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् के मानद निदेशक श्री नारायण कुमार ने मिश्र जी की प्रतिभाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि वे कई भाषाओं के जानकार थे। वे हमेशा जिज्ञासु बने रहते थे। केंद्रीय हिंदी संस्थान की पूर्व छात्रा तथा फ़िजी की लेखिका सुभाषिनी लता कुमार ने कमला प्रसाद मिश्र की साहित्यिक देन पर चर्चा करते हुए उनकी मशहूर कविता सुमन की पंक्तियाँ 'मुस्करा लो और दो दिन' उधृत करते हुए कहा कि श्री मिश्र जी ज़मीन से जुड़े रचनाकार थे। न्यूज़ीलैंड से जुड़े श्री रोहित कुमार हैप्पी ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

साभार : तेलंगाना समाचार.ऑनलाइन

सम्मान एवं पुरस्कार

श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफ़्को साहित्य सम्मान समारोह

31 जनवरी, 2022 को संत गाडके जी महाराज सभागार गोमती नगर में उर्वरक क्षेत्र की प्रमुख संस्था इफ़्को द्वारा वर्ष 2021 के अंतर्गत आयोजित श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफ़्को साहित्य सम्मान समारोह के दौरान सुविख्यात साहित्यकार ममता कालिया, इफ़्को के अध्यक्ष श्री दिलीप संघाणी व प्रबंध निदेशक, डॉ. उदय शंकर अवस्थी के हाथों वरिष्ठ कथाकार शिवमूर्ति को सम्मान प्रदान किया गया।



अपने स्वागत-भाषण में प्रबंध निदेशक, डॉ. उदय शंकर अवस्थी ने कहा कि श्री शिवमूर्ति ने अपनी कहानियों में विकास और पिछड़ेपन के बीच गाँव की वास्तविकता को पकड़ने का प्रयत्न किया। श्री दिलीप संघाणी ने भी श्री शिवमूर्ति के रचनाकर्म को सराहा।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि ममता कालिया ने कहा कि श्री शिवमूर्ति की कृतियों में प्रेमचंद और रेणु की छाप है। श्री जयप्रकाश कर्दम ने बताया कि श्री शिवमूर्ति के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन की विशेषताओं, विषमताओं और अंतर्विरोधों का यथार्थ चित्रण है। इस अवसर पर श्रीलाल शुक्ल व श्री शिवमूर्ती की प्रकाशित पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई। उन्होंने 'कसाईबाड़ा', 'अकालदण्ड', 'तिरिया चरित्तर' आदि का सृजन किया।

साभार : न्यूज़ट्रैक.कॉम

श्रद्धांजलि

हिंदी की सर्वश्रेष्ठ गायिका लता मंगेशकर

6 फ़रवरी, 2022 को भारत की सर्वश्रेष्ठ गायिका, लता मंगेशकर जी का 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 28 सितंबर, 1929 को इंदौर, मध्यप्रदेश में हुआ था। आपने 1942 से 1948 के बीच हिंदी व मराठी में करीब 8 फ़िल्मों में काम किया, जिसमें 1942 में 'पहेली मंगलागौर', 1944 में 'मांझे बाल', 'गजाभाऊ', 1943 में 'छिमुकला संसार', 1945 में 'बड़ी माँ', 1946 में 'जीवन यात्रा', 1954 में 'छत्रपति शिवाजी' आदि शामिल है।



सन् 1947 में, लता जी को 'आपकी सेवा में' फ़िल्म में एक गीत गाने का मौक़ा मिला। इस गीत के बाद उन्हें फ़िल्म जगत् में पहचान मिली। तत्पश्चात् उन्हें फ़िल्मों में कई गीत गाने का मौका मिला।

1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इसमें तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू भी उपस्थित थे। इस समारोह में लता जी के द्वारा गाए गये गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगों' को सुनकर सब लोग भाव-विभोर हो गए थे। पं. नेहरू की आँखें भी भर आई थीं। ऐसा था आपका भावपूर्ण एवं मर्मस्पर्शी स्वर। आज भी जब देश-भक्ति के गीतों की बात चलती है, तब सब से पहले इसी गीत का उदाहरण दिया जाता है।

आपने गीत, गज़ल और भजन के गायन के क्षेत्र में अपनी कला बिखेरी हैं। गीत चाहे शास्त्रीय संगीत पर या पाश्चात्य धुनों पर आधारित हो या फिर लोक धुन की खुशबू में रचा-बसा हो हर गीत को लता जी अपनी आवाज़ के जादू से एक ऐसे जीवंत रूप में पेश करती हैं कि सुनने वाला मंत्रमुग्ध हो जाता है। लता जी ने युगल गीत भी बहुत खूबी के साथ गाए हैं। मन्ना डे, मुहम्मद रफ़ी, किशोर कुमार, महेंद्र कपूर आदि के साथ-साथ उन्होंने दिग्गज शास्त्रीय गायकों पं. भीमसेन जोशी, पं. जसराज इत्यादि के साथ मनोहारी युगल-गीत गाए हैं। गज़ल के बादशाह जगजीत सिंह के साथ उनकी एलबम "सजदा" ने लोकप्रियता की बुलंदियों को छुआ।

उन्हें 2001 में भारत सरकार द्वारा देश के सर्वोच्च पुरस्कार 'भारत रत्न', 1958, 1962, 1965, 1969, 1993 और 1994 में फ़िल्म फ़ेयर पुरस्कार, 1972, 1975 और 1990 में राष्ट्रीय पुरस्कार, 1966 और 1967 में महाराष्ट्र सरकार पुरस्कार, 1969 में पद्म भूषण, 1989 में 'दादा साहेब फाल्के पुरस्कार', 1993 में फ़िल्म फेयर के 'लाइफ़टाइम अचीवमेंट पुरस्कार', 1996 में स्क्रीन के 'लाइफ़टाइम अचीवमेंट पुरस्कार', 1997 में 'राजीव गांधी पुरस्कार', 1999 में पद्मविभूषण, एन.टी.आर. और ज़ी सिने के 'लाइफ़टाइम अचीवमेंट पुरस्कार', 2000 में आई. आई. ए. एफ.(आइफ़ा) के 'लाइफ़टाइम अचीवमेंट पुरस्कार', 2001 में स्टारडस्ट के 'लाइफ़टाइम अचीवमेंट पुरस्कार', 'नूरजहाँ पुरस्कार', 'महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार' आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि है।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

संपादकीय

वैश्विक स्तर पर मानक हिंदी का शिक्षण



पाँचों महाद्वीपों के लगभग 132 देशों में भारतीय मूल के लोग बसे हुए हैं। हिंदी भाषा प्रवासी भारतीयों के बीच एक जीवंत कड़ी है। सर्वेक्षणों के अनुसार चीनी भाषा के बाद विश्व में सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली भाषा हिंदी है। इसके पश्चात् स्पेनिश, अंग्रेज़ी, अरबी, रूसी और फ्रांसीसी भाषाओं का स्थान क्रमिक रूप से आता है। हिंदी विश्व-बंधुत्व की भावना से ओत-प्रोत है, इसीलिए वह विश्व की अनेक भाषाओं के शब्दों को गृहीत करके समृद्ध हुई है। विश्व का सबसे बड़ा भाषिक शब्दकोष हिंदी का ही है। हिंदी में उच्चस्तरीय साहित्य है, जिसके प्रति पूरा विश्व आकर्षित है। हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ देश-विदेश में छप रही हैं। हिंदी सिनेमा तो जगत् प्रसिद्ध है। इंटरनेट और सोशल मीडिया में भी हिंदी स्वीकृत और लोकप्रिय है। एक ओर भौगोलिक और जनतांत्रिक दृष्टि से, तो दूसरी ओर शब्द-भण्डार, साहित्य-सृजन, मनोरंजन और जन-संचार की दृष्टि से हिंदी विश्व की व्यापक भाषा बनी हुई है। परन्तु विश्व भाषा के रूप में हिंदी को पूर्णत: प्रतिष्ठित करने के लिए कई चुनौतियों को पार करना अभी शेष है। इन चुनौतियों में से एक है - वैश्विक स्तर पर मानक हिंदी का शिक्षण। हिंदी-शिक्षण का दायरा और पैमाना विस्तृत करने के उद्देश्य से विश्व भर में हिंदी के सर्वस्वीकृत रूप के पठन-पाठन को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

दुनिया के लगभग 175 देशों में और 180 विश्वविद्यालयों में हिंदी का शिक्षण होता है, परन्तु एक सच्चाई यह भी है कि विश्व की यात्रा करती हुई हिंदी जिस देश में भी पहुँची, वहाँ प्रयुक्त होने वाली अन्य भाषाओं के संपर्क में आकर परिवर्तित होती रही। फ़िजी में हिंदी फ़िजीबात बनी, तो सूरीनाम में सरनामी हिंदी बनी। यद्यपि परिवर्तनशीलता जीवंत भाषा की एक विशेषता है, तथापि भाषा के लिखित और मौखिक प्रयोग में एकरूपता का भी महत्त्व है। अनेकरूपता के कारण हिंदी के विद्यार्थी उलझन में पड़ जाते हैं। हिंदी में सर्वाधिक अनेकरूपता क्रिया के प्रयोग में देखी जाती है। उदाहरणार्थ 'जाना' क्रिया के भूतकालिक पुल्लिंग और एकवचन रूप में, अंत में 'या' लगता है और स्त्रीलिंग एकवचन में 'यी' जोड़ते हैं। इसी रूप में पुल्लिंग बहुवचन में 'ये' और स्त्रीलिंग बहुवचन में 'यीं' लगाते हैं। जैसे 'गया' से - 'गयी', 'गये', 'गयीं'। ये क्रियाएँ 'गई', 'गए', 'गईं' के रूप में भी लिखी जाती हैं। 'आना' क्रिया भविष्यत् काल में 'आयेगा', आएगा' और 'आवेगा' तीनों प्रकार से लिखी जाती है।

हिंदी व्याकरण के कुछ नियमों के संबंध में मतभेद दृष्टिगोचर होता है। उदाहरणार्थ अनुस्वार के साथ 'हिंदी' लिखा जाए या आधा 'न' के साथ 'हिन्दी' लिखा जाए। बच्चों को संबोधित करते समय 'प्यारे बच्चो' कहा जाता है, क्योंकि कारक के अंतर्गत संबोधन आता है, जिसमें 'बच्चो' सही है। व्याकरण के इस नियम पर ध्यान न देते हुए 'प्यारे बच्चों' से भी संबोधन किया जाता है। अत: हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि में समरूपता का अभाव दिखाई देता है, जो भाषा के पठन-पाठन में बाधक सिद्ध होता है। भारत के केन्द्रीय हिंदी निदेशालय ने लिपि का मानकीकरण किया है, किन्तु मानक देवनागरी का उपयोग सर्वत्र नहीं होता है। विश्व हिंदी समुदाय को हिंदी के मानकीकृत रूप का ज्ञान विभिन्न माध्यमों से कराना और मानक हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ाना अनिवार्य है, जिससे कि हिंदी के प्रयोग में समानता हो।

वर्तमान समय में सरल हिंदी पढ़ाने की माँग की जाती है, क्योंकि भाषा यदि जटिल होगी, तो नई पीढ़ी उससे जुड़ने में रुचि नहीं दिखाएगी। हिंदी को सुबोध बनाने के प्रयास में संस्कृत के कुछ नियम छूट रहे हैं। जैसे शब्दों के अंतिम वर्ण में 'हल्' चिह्न का प्रयोग रुक गया है - पृथक (पृथक्)। हिंदी व्याकरण के किसी भी नियम को बदलने से पहले चर्चा-परिचर्चा, संवाद और सहमती का होना और सर्वस्वीकृत नियमों की सूची से विश्व हिंदी परिवार को परिचित कराना ज़रूरी है, ताकि व्याकरण की अशुद्धियाँ न हों और अनेकरूपता से भी बचा जा सके। आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का कथन अविस्मरणीय है -

"हिंदी अपनी सीमाओं को लाँघती निरंतर व्यापक होती आ रही है। इस प्रक्रिया को सरल और सुगम बनाने के सतत प्रयास होते रहने चाहिए। व्यापकता किसी सीमा तक विविधता को भी साथ लाती है। हिंदी की प्रवृत्ति के अनुरूप एकरूपता साधने के प्रयास भी वांछनीय हैं।"

हिंदी का पाठ्यक्रम तैयार करते समय उसके उद्देश्य स्पष्ट किए जाते हैं और अपेक्षित लक्ष्य के अनुसार पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण होता है। तदुपरांत पाठ्य-पुस्तकों के आधार पर हिंदी का अध्ययन-अध्यापन होता है। विश्व के भिन्न भागों में लेखकों के विभिन्न समूह पाठ्य-पुस्तकें तैयार करते हैं। इन पाठ्य-पुस्तकों में ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि के प्रयोग में एकरूपता की कमी स्पष्ट परिलक्षित होती है। हिंदी शिक्षक किस पाठ्य-पुस्तक का चयन करे? यह यक्ष प्रश्न बना हुआ है। अपेक्षा यह है कि पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण, चारों दिशाओं में प्रयुक्त होने वाली पाठ्य-पुस्तकों में हिंदी का एक सुनिश्चित और सुनिर्धारित रूप हो, जिसके फलस्वरूप एक देश की हिंदी पाठ्य-पुस्तक दूसरे देश में भी प्रयुक्त हो सके और निर्धारित पाठ्य-पुस्तक के आधार पर कोई विदेशी भी अल्प समय में मानक हिंदी पर अच्छा अधिकार प्राप्त कर सके।

युग की माँग के अनुरूप हिंदी-शिक्षण प्रौद्योगिकी के साथ जुड़ गया है। हिंदी शिक्षक अतिरिक्त प्रश्न-पत्रों का स्वयं टंकण करके छात्रों को अभ्यास करने के लिए देते हैं। हिंदी कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि के शिक्षण में प्रौद्योगिकी उपयोगी सिद्ध हो रही है। हिंदी के पठन-पाठन को अधिक रुचिकर बनाने के लिए कई संस्थाएँ हिंदी-शिक्षण की मल्टीमिडिया सामग्रियाँ तैयार कर रही हैं। विश्वविद्यालयों में शोधार्थी इंटरनेट के सहारे शोध-कार्य कर रहे हैं। प्रौद्योगिकी से हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। परन्तु अभ्यास-कार्यों का टंकण करने वाले हिंदी शिक्षकों को, मल्टीमीडिया सामग्री के निर्माताओं को या कंप्यूटर, इंटरनेट और मोबाइल के सहारे हिंदी सीखने वाले विद्यार्थियों को जब मानक हिंदी की सही पहचान होगी, तभी वे हिंदी के सर्वग्राह्य रूप को अपनाएँगे।

हिंदी शिक्षकों को मानक हिंदी के शिक्षण हेतु योजनाबद्ध तरीके से प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। प्रशिक्षण-सत्रों में प्रतिभागिता करने वाले हिंदी अध्यापकों को विषय-विशेषज्ञों के उचित मार्गदर्शन में मानक हिंदी संबंधी अपनी शंकाओं का निवारण करने के अवसर प्राप्त होंगे। हिंदी पाठ्य-पुस्तक निर्माताओं और हिंदी के विद्यार्थियों के लिए भी 'मानक हिंदी का प्रयोग' विषय पर नियमित रूप से कार्यशालाओं एवं विचार-गोष्ठियों की व्यवस्था करनी है, जिससे कि मानक हिंदी का ज्ञान गहन हो जाए और हिंदी की एकरूपता निश्चित हो जाए।

एकरूपता भाषा का विशेष गुण है। उच्चारण और लेखन संबंधी एकरूपता के आधारभूत तत्त्व हिंदी की अपनी प्रकृति और व्यावहारिक सुविधा है। हिंदी के क्रियारूप, अव्यय, विशेषण आदि की वर्तनी के अनेक प्रचलित रूपों से उत्पन्न समस्याओं को दूर करने हेतु हिंदी की प्रकृति और व्यावहारिक सुविधा के अनुरूप हिंदी का मानककीकरण करना वांछनीय है। वैश्विक स्तर पर मानक हिंदी के शिक्षण की चुनौती को पार करने के लिए हिंदी शिक्षकों को भी अपने सामर्थ्य का विकास करना है। हिंदी में सुविचारित एकरूपता ही हिंदी-शिक्षण की नींव को सशक्त कर पाएगी और हिंदी विश्व भाषा के पद की पूर्ण अधिकारिणी बन पाएगी।

डॉ. माधुरी रामधारी
उपमहासचिव

संपादक	: डॉ. माधुरी रामधारी	फ़ोन	: (230) 660 0800
सहायक संपादक	: श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी	ई-मेल	: info@vishwahindi.com
टंकण टीम	: श्रीमती त्रिशिला आपेगाडु, श्रीमती जयश्री सिबालक-रामसर्न, श्रीमती विजया सरजु	वेबसाइट	: www.vishwahindi.com
		डेटाबेस	: www.vishwahindidb.com
पता	: विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius	फ़ेसबुक	: www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/
		ट्विटर	: @WHSMauritius
		इंस्टाग्राम	: WHS_08